अध्याय : 4

'अज्ञेय के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता'

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

अध्याय - 4

'अज्ञेय के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता'

प्रस्तावना :

युग के अनुसार उपन्यासों का आधार बदलता रहा है। कभी उसका आधार सामाजिक, नैतिक एवं सुधारवादी रहा तो कभी सामाजिक एवं पारिवारिक परिवेश ही उसका आधार बन गया और आज तो उसका आधार इन दोनों से एकदम हटकर कुछ और ही हो गया है। आज के उपन्यासकार की दृष्टि सीधे वर्ग अथवा व्यक्ति पर केंद्रित हो गई हैं वह वर्ग एवं व्यक्ति दोनों की चेतनाओं का अंकन कर रहा हैं जहाँ तक व्यक्तिगत चेतना के अंकन का प्रश्न है वह उपन्यासकार सदा व्यक्ति की अभ्यांतरिक चेतना का उद्घाटन मनोविश्लेषक के योग से कर रहा है। संपूर्ण साहित्य में व्यक्ति के मनोभावों का ही चित्रण है। कोशकार के अनुसार भाव, मनोभाव, मनोविकार और मनोवेग समान अर्थ के रूप में प्रयुक्त हुए हैं तथा मन में उत्पन्न होने वाले विचार अथवा प्रवृत्ति के रूप में इसकी व्याख्या की गयी है।

मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकारों में अज्ञेय का नाम लिया जाता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यास की प्रवृत्ति आधुनिक युग की नवीनतम देन है तथा हिंदी मनोवैज्ञानिक उपन्यास के जनक के रूप में प्रतिष्ठित अज्ञेय इस धारा के स्वप्नदृष्टा हैं। इन्होंने उपन्यास रचना के समय दर्शन तथा मनोविज्ञान का आधार लेकर चारित्रिक उद्घाटन किया है। सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' सामाजिक वस्तुस्थिति के चित्रकार है। मनोविश्लेषण इनकी प्रमुख विशेषता है। इनके उपन्यासों में आत्ममुखी और अहंप्रमुख कथाकार का व्यक्तित्व परिलक्षित होता है। युग-चेतना के अनुकूल अज्ञेय व्यक्तिवादी जीवन-दर्शन की अभिव्यक्ति देते हैं। उनके उपन्यासों में क्रमश: वैज्ञानिक और आदर्शोन्मुखी तथा आधुनिक समाज में क्रमश: वैज्ञानिक और आदर्शोन्मुखी तथा आधुनिक समाज में रोमान्टिक प्रेम के आदर्श पर आघात करते हुए स्त्री-पुरुष के प्रकृत संबंधों को चित्रांकित किया गया है। अज्ञेय के- ''शेखर एक जीवनी'', ''नदी के द्वीप'' और ''अपने अपने अजनबी'' इन उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता का चित्रण प्रखरता से दिखायी देता है। मनोविज्ञान के कतिपय

विश्लेषण-प्रारूपों के अंतर्गत अज्ञेय के उपन्यास संसार का विवेचन करने का प्रयास किया है।

4.1 **अज्ञेय के उपन्यासों मे मनोवैज्ञानिकता :**

अज्ञेय का उपन्यास फ्रायड़ीन मनोविज्ञान पर आधारित है बल्कि यूँ कहा जाए कि उनका संपूर्ण चिंतन मनोविज्ञान से आंक्रांत है। अज्ञेय उपन्यासों को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने में पूर्ण सिद्धहस्त हैं। फ्रायड़ीय मनोविज्ञान के अनुसार मानव आचरण की मूल प्रेरणायें - अहंता, भय और सेक्स इन्हीं तीन प्रेरणाओं के वशीभूत मानव जीवन के विविध क्षेत्रों में अपने कदम रखता है। फ्रायड़ के मतानुसार मानव अपने जन्म के साथ इन तीन प्रेरणाओं से शासित होने लगता है। फ्रायड़ के इस मनोवैज्ञानिक परिभाषा से व्यक्ति की अहंता, भय और सेक्स संबंधी मूल प्रेरणाओं के माध्यम से समाज की अपेक्षा व्यक्ति का महत्त्व बढ़ जाता है। अज्ञेय के जीवन दर्शन पर फ्रायड़ीय मनोविज्ञान ने ऐसी छाप छोड़ी है, वह मानव जीवन को गति प्रदान करने वाली मूल प्रेरक शक्तियों - अहंता, भय और सेक्स सम्मुख नतमस्तक है।

अज्ञेय के ''शेखर : एक जीवनी'', ''नदी के द्वीप'' तथा ''अपने अपने अजनबी'' उपन्यासों में आक्रोश, खीझ, भय, कुंठा, आत्मरति तथा अहं का विस्फोटक आदि मनोवैज्ञानिक गुण दिखाई देते हैं। इससे पता चलता है कि, अज्ञेय के उपन्यास मनोवैज्ञानिक उपन्यास है।

आक्रोश -

अज्ञेय के पात्र बुद्धिजीवी वर्ग के कारण समाज की परिस्थितियाँ कभी उनके अनुकूल पड़ती तो कभी प्रतिकूल। अनुकूल परिस्थितियाँ यदि मन को आनंदित या भाव विभोर करती हैं, वहीं पर प्रतिकूल परिस्थितियाँ ह्दय को वेदना या दुख पहुँचाती हैं ऐसी स्थिति में समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति स्वयं के प्रति, परिवार के सदस्यों प्रति आक्रोश उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास प्राय: आक्रोश एवं खीझ से भरा हुआ है। सेल्मा कहती है- ''उसके सामने ही नहीं, अपने सामने भी मेरा मन होता है कि चीख पड़ूं, कि

अपने बाल नोचू, कि अइनें कि सामने खड़ी होकर अपने को मारू, छोटी कैंची उठाकर अपने गालों में चुभा लूं, कि पानी का जग उठाकर आइने पर पटक्कर उसके और आइने के भी टुकडे-टुकडे कर दूं।''[1] इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि बूढ़ी सेल्मा अपने आक्रोश को स्वयं पर न निकालकर अन्य वस्तुओं पर निकाल रही थी।

'शेखर : एक जीवनी' में शेखर का आक्रोश माँ के प्रति आक्रोश प्रकट करता है। माँ के यह कहने पर कि सच पूछो मुझे इसका भी विश्वास नहीं है। शेखर सोचने लगता है - ''माँ का कोई काम नहीं करूँगा, कोई काम नहीं करूँगा, उससे बोलूँगा नहीं, कभी कोई पूछेगा तो भी कहूँगा कि वह मेरी माँ नहीं हैं।''[2] शेखर उपन्यास में एक विद्रोही प्रवृत्ति वाला व्यक्तित्व बनकर उभरा है

'नदी के द्वीप' उपन्यास में हेमेंद्र का आक्रोश दिखाई देता है। चंद्रमाधव द्वारा यह कहने पर कि रेखा को वापस क्यों नहीं बुलाते इस पर हेमेंद्र का आक्रोश भरा उत्तर, उसके जो जी में आये करे - कुतिया, फिरने दो आवारा - चंद्रमाधव को मिलता है।

इस प्रकार तीनों उपन्यासों में 'आक्रोश' यह मनोवैज्ञानिक गुण दिखाई देता है।

खीझ -

खीझ भी एक मनोवैज्ञानिक गुण है। 'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास में सेल्मा के पूछने पर - तुमने सचमुच नाश्ता कर लिया है। इस प्रश्न पर योके खीझ जाती है और कहती है, ''क्या ले लिया था? एक प्याला गरम पानी।''[3]

'शेखर : एक जीवन' उपन्यास में विद्यालय के दिनों में शेखर से मॉनीटर गाने को कहता है। वह गाना नहीं गाता तब उसका झगड़ा हो जाता है और इसी कारण उसे क्लास में दंड मिलता है, तत्पश्चात शेखर खीझ भरे स्वर में उसे 'उल्लू' कहकर क्लास से बाहर जाता है।

'नदी के द्वीप' उपन्यास में भुवन और रेखा तो प्रेमप्रणय प्रसंग से अनुप्राणित है लेकिन चंद्रमाधव एक ऐसा पात्र है जो प्राय: किसी भी बात का उत्तर खीझ भरे स्वर में देता है। इसप्रकार तीनों उपन्यासों में खीज यह एक मनोवैज्ञानिक गुण दिखाई देता है।

भय -

खीज के समान ही भय यह एक मनोवैज्ञानिक गुण है। भय उत्पन्न होने के कई कारण और परिस्थितियाँ होती है। भय उत्पन्न होने के कारण कभी-कभी परिस्थितियाँ स्पष्ट भी होती है और अस्पष्ट भी। भय की अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है जैसे काँपना, चीखना, पसीना आना और भागना आदि। विद्रोही स्वभाव के बालकों में इस प्रकार की प्रवृत्तियाँ अधिकांशत: पाई जाती हैं। कभी-कभी लोग अपने भय को छुपाने के लिए क्रोध का प्रदर्शन भी करते हैं। यदि 'शेखर : एक जीवनी' स्वप्न विश्लेषण तंत्र पर आधारित है तो 'नदी के द्वीप' में प्रेम से उत्पन्न होने वाले भय का विषय बन जाता है और वहीं पर'अपने-अपने अजनबी' मृत्यु का भय का द्योतक है।

"शेखर द्वारा देखा गया यह स्वप्न कि उसके सामने एक भीमकाय वाघ प्रकट हो गया है। एक पंजा झपटने के लिए उठा, भयंकर दांत - वह जीव-आरक्त आँखे और चीख उठता है भय से विफल होकर... और भागता है।"[4] इस प्रकार बालक शेखर भयभीत है।

'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास में योके भयभीत है कि वह इस बर्फ के घर से कब आजाद होगी, सेल्मा भयभीत है कि मौत के पंजे उसकी ओर धीरे-धीरे अबाध गति से निरंतर बढ़ रहे हैं। फोटोग्राफर दैनिक जीवनचर्या से भयभीत है तो यान भूख की आग से। सभी पात्र किसी न किसी रूप में भयभीत दिखाई पड़ते हैं। यान द्वारा दरवाजा खटखटाने पर मन में योके को भय का एहसास होता है जैसे उसी के शब्दों में 'क्या करने आया है यान रात में?' सेल्मा का दिल एकाएक जोर से धड़कने लगा और वह एक कुर्सी का हत्था पकड़ कर ख़ड़ी हो गई। दिल का जोर से धड़कना और कुर्सी का हत्था पकड़ कर खड़ा होना उसके भय का परिचायक है।

कुंठा -

कुंठा मानवीय मन की वह दशा है जो मनुष्य के व्यवहार में नहीं, बल्कि वाणी से झलकती है जब व्यक्ति किसी बात को तर्क के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर पाता है तो यह काम उसके अंदर छिपे कुंठा के भाव उजागर कर देते हैं। अज्ञेय के उपन्यासों के पात्र इस समस्या

से ग्रसित जान पड़ते हैं, इसीलिए कहीं-कहीं पर जब पात्रों के मन पर किसी अपात्र द्वारा अनैतिक व्यवहार होता है तब वह कुंठा से ग्रसित जान पड़ते हैं।

"मैं अगर ईश्वर को नहीं मान सकती तो नहीं मान सकती... मैं मृत्यु को नहीं मान सकती, नहीं मानना चाहती?"[5] इस बात से योके कुंठा से ग्रासित है यह स्पष्ट हो जाता है।

इसी प्रकार 'शेखर : एक जीवनी' में शेखर के अन्दर छुपी कुंठा सूक्तियों के रूप में जन्म लेती है, जैसे - "मैं घृणा के संसार से इतना कुचला गया हूँ कि प्यार मेरा अपराचित हो गया हैं"[6]

इसी प्रकार 'नदी के द्वीप' में रेखा और चंद्र की वार्ता भी कुंठा से ग्रसित जान पड़ती है जो क्षण में जीता है, क्षण को स्वीकार कर लेता है, वह बूढ़ा होता ही नहीं। उपर्युक्त उदाहरण कुंठा से ग्रसित अंत:चेतना से अनुप्राणित है।

आत्मरति -

अज्ञेय के अनुसार व्यक्ति अपने सामाजिक संस्कारों का पूज्य भी है, प्रतिबिंब का पुतला - जैविक और सामाजिक विरोध में नहीं, उससे अधिक पुराने व्यापक और लंबे संस्कारों को ध्यान में रखते हुए फ्रायड़ीय अंतश्चेनावाद और व्यक्तिवाद के दुहरे प्रभाव के कारण अज्ञेय के मानव के अहं और सेक्स पर रोक लगाने की माँग की। अज्ञेय के उपन्यास वैसे तो फ्रायड़ीय मनोविज्ञान पर आधारित है जिसमें 'शेखर : एक जीवनी' एवं 'नदी के द्वीप' में आत्मरति से संबंधित विभिन्न उदाहरण देखने को मिल जाते हैं। जब कि 'अपने-अपने अजनबी' में इसको सर्वथा अभाव दिखायी पड़ता है।

'शेखर : एक जीवनी' में शेखर का व्यवहार आत्मरति से परिपूर्ण है। अत्ती को देखकर उसके अहं पर चोट पहुँचती है, इतना ही नहीं जब उसको पिता के कमरे में एक ऐसी पुस्तक मिल जाती है जिसमें मानव के विभिन्न व्यवहारों का अध्ययन किया जा सकता था। उसे उन सब के उत्तर मिल जाते हैं जैसे माँ की छाती पोछना, पिता का क्रोध, नाचती हुई जिन्नियाँ की टाँगे, अमृतसर की वेश्या, सरस्वती की लज्जा, शांति के आँसू, सावित्री का मौन, शशि का आग्रह।

एकाध प्रसंग में तो शेखर समलैंगिक होने की सूचना प्राप्त होती है। शेखर कुमार से कहता है कि, "कुमार यदि मेरे अतिरिक्त तुम किसी के हुए, तो मैं तुम्हारा गला घोंट दूँगा।"[7]

'नदी के द्वीप' तो प्रेम कहानी है ही वह अपने प्रेम के पायदान पर खड़ी सीमा पर विकास पाती है। भुवन और रेखा का प्रेम – प्रेम ही नहीं अश्लीलत्व के चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाता है लेकिन उसके विचारों में भिन्नता है। रेखा भुवन के नजदीक अवश्य है तभी तो उसको आत्मरति का यह व्यंग्य सहन करना पड़ता है – "तुम मुझसे नहीं किसी और से भाग रहे हो जिसके साथ तुम्हारी नियति जुड़ी हैं।"[8]

उपर्युक्त उदाहरण आत्मरति की ओर संकेत देते हैं।

अहं का विस्फोटक -

अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में व्यक्ति द्वारा अपने अहं को अक्षुण्ण रखने का पूर्ण प्रयास किया है।

'शेखर : एक जीवनी' में शेखर की आकांक्षा को कुंठित करने के लिए बाह्य परिस्थितियाँ सामाजिक बंधन लेकर उसके समक्ष आती है तो उसका अहं भड़क उठता है। समाज के संबंध में उसके विचार है, "समाज तो तब बिगड़ता है जब धर्म रूढ़ हो जाता है। धर्म ही कुछ बुराइयों की जड़ है और उसी को मिटना चाहिए।"[9]

जब-जब शेखर के अहं को चोट पहुँचती हैं तब-तब वह विद्रोही हो जाता है। इसीलिए उसकी धारणा है कि विद्रोही बनते नहीं है उत्पन्न होते हैं।

इसी प्रकार 'अपने-अपने अजनबी' में भी बुढ़िया सेल्मा की बातें जब योके को नहीं अच्छी लगती तो वह अहं की सीमा में आ जाती है, और मन ही मन कल्पना कर लेती है कि – 'मेरे हाथ बुढ़िया के गले पर हैं और उसे घोट रहे हैं।'[10] इसी प्रकार यान से प्रणय निवेदन की कामना करती है। वह यान से शादी का प्रस्ताव करती हैं। यान उसका प्रस्ताव ठुकरा देता है, तब उसके अहं को चोट पहुँचती है।

इसी प्रकार 'नदी के द्वीप' के सभी पात्र अपने अहं, बुद्धि एवं प्रज्ञा के बल पर टिके हुए हैं। जब चंद्रमाधव पत्रकारिता पर अपने विचार व्यक्त करता है, तब उसकी अहं की भावना स्पष्ट रूप से सामने आती है।

उपर्युक्त उदाहरणों से पता चलता है कि अज्ञेय के उपन्यासों में फ्रायड़ीय मनोविज्ञान की गहरी छाप है।

अज्ञेय के 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप' और 'अपने-अपने अजनबी' उपन्यासों के पात्रों का चरित्र चित्रण करके पात्रों के मनोवैज्ञानिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया हैं। क्योंकि मनोवैज्ञानिकता अज्ञेय के उपन्यासों का प्रबल पक्ष है। इसीलिए कहा जाता है की अज्ञेय के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता प्रखरता से दिखायी देती है।

4.2 **शेखर एक जीवनी उपन्यास में मनोवैज्ञानिकता :**

'शेखर एक जीवनी' एक कालजयी मनोवैज्ञानिक उपन्यास के साथ-साथ एक व्यक्ति का निजी दस्तावेज है। इस उपन्यास की सारी कथा एक व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमती है और वह व्यक्ति है इस उपन्यास का प्रमुख पात्र 'शेखर'। बालमनोविज्ञान के सिद्धांतों का समावेश इस उपन्यास की एक खूबी है। कुछ आलोचकों ने मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण केआधार पर इस उपन्यास की मूल संवेदना को पूरा-पूरा नहीं पकडा है। यह इस कृति की असामान्यता है जो विशेष दृष्टि की अपेक्षा करती है। 'शेखर : एक जीवनी' का मनोविश्लेषण पक्ष अत्यंत समृद्ध है। व्यक्ति मन के सूक्ष्म से सूक्ष्म अनुभवों को अंतंदर्वंद्वों को, बाह्य जगत की प्रतिक्रियाओंको, अवचेतन के धरातल पर विषम् संवेदनाओं को, मन में उभरती जिज्ञासाओं का और उनसे जुडे प्रश्नों को अंकित किया गया है। इस अंकन में बिंबों का प्रयोग किया गया है। वयःसन्धि की स्थिति में मन में सौंदर्य और प्रेम का नयां स्वर जो उभरता है, वह अद्भुत होता है। वह वासना और आसक्ति में अंतर जानना चाहता है। जिज्ञासा और कौतूहल प्रधान पक्ष है जिसका संबंध बाल मनोविज्ञान का क्षेत्र है। 'शेखरः एक जीवनी' उपन्यास के पात्रों के द्वारा मनोवैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला गया है।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

4.2.1 **शेखर :-**

'शेखर : एक जीवनी' इस उपन्यास का प्रमुख पात्र 'शेखर' है। वही 'शेखर' जो जिज्ञासु है, हर चीज की तह में जाकर उसे अच्छी तरह जान लेना चाहता है, जो विद्रोही है, क्रांतिकारी है, अंतर्मुखी है, स्वतन्त्रता का खोजी है, जिसे सागर की लहरे, पर्वतों की चोटियाँ, यानी कि प्राकृतिक सौन्दर्य बहुत प्रिय है, जिसे ईश्वर में विश्वास नहीं है, जो छुआ छूत को नहीं मानता, माँ से नफरत करता है और पिता से पिटकर भी उसे प्यार करता है और प्यार पा लेने के लिए सदा आतुर रहता है। अज्ञेय जी ने केवल उसके विद्रोही जीवन का चित्रण ही नहीं किया है बल्कि उसका निर्माण भी दिखलाया है। शेखर सच्चे अर्थ में स्वत्वान्वेषी है। बाल सुलभ जो भी जिज्ञासा उसकी चेतना में आती है, आपने ज्ञान और अनुभव के द्वारा वह उसका रहस्योद्घाटन करना चाहता है। किंतु उसका प्रश्न अनुत्तरित ही रह जाता है। उनका समाधान या तो हो नहीं पाता और अगर होता भी है तो केवल बहलाव के लिए फलस्वरूप उसका मन दमित और कुंठित हो जाता है। कालांतर में ये दमित इच्छाएँ और कुंठाएँ ही उसे विस्फोटक और विद्रोही बनाने के लिए उत्तरदायी होती हैं। शेखर का विद्रोही व्यक्तित्व भी सर्वथा मनोविज्ञान सम्मत है।

जिज्ञासू -

शेखर अपनी अनुभूतियों और जिज्ञासाओं के प्रति बेहद ईमानदार है। उसमें जिज्ञासा का समाधान न होकर प्रश्नों की तीव्र आकुलता और तीखी तडप है। शेखर के अंदर एक सशक्त कुतूहल है। जिज्ञासु शेखर समाज को परंपरा के चश्में से नहीं देखता है, अपनी खुली दृष्टि से देखता है और अपने सहज ज्ञान के सहारे उसका नया मूल्यांकन करता है। जन्म, मृत्यु और ईश्वर आदि के विषय में उसके मन में जिज्ञासा पैदा होती हैं। शेखर के जीवन में कई सामान्य घटनाएँ होती हैं। घर में एक नए शिशु का आगमन होने पर शेखर के बाल-मन में उत्सुकता अंकुरित होती है बच्चे कैसे आते हैं। लडाई से मारे सैनिकों के बारे में शेखर समाचार सुनता है। युद्ध में मामा की मृत्यु की खबर भी सुनता है। उसके प्रश्नों को बड़े लोग उत्तर न देते हैं। सुनी हुई कहानियों के आधार पर शेखर आपने निष्कर्ष पर पहुँचता है।

जिज्ञासावश वह पिताजी के किताब लिखने का अंधानुकरण करता है। जिज्ञासा में वह एक बार माँ से पूछता है – "माँ तुम कब मरोगी?"[11] इस प्रश्न के जवाब में शेखर की घरवालों से खूब पिटाई होती है, परंतु उसकी मृत्यु विषयक जिज्ञासा और अधिक प्रबल होती है। यही मनोवैज्ञानिक तथ्य प्रस्तुत घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट होता है।

अहंवादी -

शेखर अहंवादी है, पर उसका अहं संतुलित और स्वाभाविक है। शेखर ने अपने अनुभव के आधार पर सीखा और जाना है कि – "अहंता, भय और सेक्स – ये तीन हमारी प्रेरणाएँ हैं, जो प्रत्येक मानव के जीवन का अनुशासन करती है।"[12] ये प्रेरणाएँ वस्तुत : नैसर्गिक और जन्मजात हैं। प्रारंभ से ही अहंभाव शेखर के अंतरंग जीवन का स्वभाव और अंग बन चुका है। बचपन में – तीन वर्ष की अवस्था में वह लेटरबॉक्स पर सवार है। मानो कोई सम्राट अपने विजयी घोडे पर बैठकर संसार को ललकार रहा है। डाकिये के मना करने पर प्रतिशोध के रूप में वह उस डाकिये के पाँव कुचलते हुए भाग खडा होता है तथा अपने आपमें विजय का अनुभव करता है। वस्तुत : यह अहंता अथवा अहं का प्रतीक है। बचपन में प्रतिभा नामक लडकी के घर वह खाना खाने बैठता है, पर अंग्रेजी तौर तरिकों से न खा पाने के कारण भूखा ही रह जाता है। प्रतिभा उसका मजाक़ उड़ाती है, तो उसके स्वाभिमान को भारी ठेस पहुँचती है और उसी दिन से वह प्रतिभा का साथ छोड़ देता है। इस प्रकार शेखर अहंवादी है।

कमजोर मन का शेखर -

युवा अवस्था में अपनी बहन सरवस्ती की शादी की बात सुनने पर शेखर के मन में भयानक उथल–पुथल आता है। तब वह तेज बुखार का शिकार हो जाता है। आगे चलकर उसे निमोनिया हो जाता है। बहन पर अपना अधिकार नष्ट होने की आशंका से वह बेचैन हो जाता है। उसे किसी भी स्त्रोत से सहानुभूति नहीं मिलती है। मानसिक विक्षोभ के कारण स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पडता है। इस प्रकार शेखर में कमज़ोर वृत्ति दिखाई देती है।

कामभावना -

फ्रायड़ के यौन सिद्धांत के अनुरूप ही शेखर के व्यक्तित्व का विकास होता है। अपने संपर्क में आई हुई प्रत्येक लड़की के प्रति वह कामभाव का अनुभव करता है तथा उसे पाने के लिए प्रयत्न भी करता है। परिवार में माता-पिता के पारस्पारिक व्यवहारों, पिता के अनैतिक आचरणों, माँ के प्रति उनका बेताल व्यवहार, माँ का छाती फाडकर चिल्लाना और नौकरानी की पीठ उघाडकर दिखाना आदि से उसके मन में यौन संबंधी भावनाएँ उमडती हैं। शेखर के यौन कामभावना का विकास तीन बिंदुओं पर दिखाई पडता है - आत्मरति, समलिंगी रति तथा विपरीत लिंगी रति। उसकी समलिंगी रति जाग्रत होती है - अपने से एक वर्ष बड़े सहपाठी मित्र कुमार के प्रति। शेखर कुमार पर एकाधिपत्य स्थापित करना चाहता है। जिसकी परिणति होती है - शारीरिक हाव-भाव, अंग-चेष्टा या चुंबन आदि में। वह कहता है - "कुमार यदि तुम मेरे अतिरिक्त किसी के हुए तो मैं तुम्हारा गला घोंट दूँगा।"[13] इतना ही नहीं शेखर ने कुमार को अपनी ओर खींचकर उसका मुँह चूम लिया।

शेखर के ह्दय में विपरीत लिंगी रति भावों का अनेक उद्रेक उन समस्त नारियों के संदर्भ में होता है जो कोई उसके संपर्क में आती है। वह चाहे सरस्वती हो, चाहे शीला, शारदा या शांती हो या चाहे शशि हो। यह सब उसके भावों का अतिरेक या व्याभिचार न होकर उसकी सहज बुद्धि और सहज विकास का नैसर्गिक व स्वाभाविक परिणाम है। यही कारण है कि उसकी सगी बडी बहन सरस्वती उसे सरस माँ, मधुर और मौसेरी बहन शशि सुंदर, उन्मद तथा उसके व्यक्तित्व की पूरक प्रतीत होती है। इस प्रकार शेखर कामभावना का प्रतीक दिखाई देता है।

भावुकता -

भावुकता शेखर के चरित्र का प्रमुख गुण है। उसका भावुक मन फांसी की कोठरी में अंग्रेज कवियों की कविताएँ स्मरण करने को बाध्य करता है। यही नहीं अपितु इसी भावुकता के कारण वह अपने सम्पर्क में आने वाली हर लडकी-शीला, शारदा,शशि,प्रतिभा और मणिका से कुछ-न-कुछ लगाव अनुभव करता है। शशि शेखर की मौसेरी बहन हैऔर

विवाहित है। शारदा के साथ रागात्मक लगाव अनुभव करते समय उसकेमन पर नैतिकता का द्वंद्व हावी रहता है कि कहीं वह अनुचित तो नहीं कर रहा। भावुकता का यह वेग या तो काव्य रचना में प्रस्फुटित हुआ है या यौनाकर्षण में। भावुकता उसके चरित्र को विशिष्ट बनाती है तथा उसकी विद्रोही प्रवृत्ति को काबू में रखती है। बाबा मदन सिंह एवं अपनी माता की मृत्यु पर शेखर फूट-फूट कर रोता है जो उसकी भावुकता का ही प्रतीक है। यही नहीं अपितु भावुक होने के कारण वही वह आत्महत्या के लिए भी प्रवृत्त होता है।

भयत्रस्तता -

बालक शेखर के व्यक्तित्व में भयत्रस्तता भी विद्यमान है। अंधेरे में जाने से वह घबराता है, उसे भयानक एवं डरावने स्वप्न आते हैं। अंधेरे में उसे ऐसा लगता जैसे अनेक बाघ उस पर झपटने को तैयार है। यह डर तब मिटा जब एक निर्जीव बाघ उसके घर पर लाकर रखा गया। अपने भाइयों की देखा-देखी वह उसके पास गया, उसकी पीठ पर बैठा और उसे निर्जीव पाकर उसके मुख में हाथ भी डाला। उसने एक चाकू से उसकी खाल को फाड़ दिया जिसमें से घास-फूस निकलकर बिखर गई। इससे उसका डर समाप्त हो गया और वह निर्भीक हो गया।

विद्रोही -

अज्ञेय की मान्यता है कि विद्रोही उत्पन्न होते हैं, बनते नहीं है। शेखर जन्मजात विद्रोही स्वभाव का है इसीलिए वह समाज, धर्म, नैतिकता और राजनीती सभी के प्रति विद्रोही भाव रखता है । डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार - "शेखर का विद्रोह एवं आत्मपीडा दोनों ही उसके निठल्ले व्यक्तित्व के दो पहलू हैं। वह विद्रोही है, क्रांतिकारी नहीं।"[14] शेखर का व्यक्तित्व अंतर्मुखी है तथा वह विद्रोही स्वभाव का है। शेखर इस युग के उस युवा वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है जो जन्म से ही विद्रोही है। यह विद्रोह भावना उसे अपने परिवार से अलग करती है। छोटी से छोटी बात में भी उसका मत विद्रोह करने लगता है। यह विद्रोह आगे चलकर इतना व्यापक हो जाता है कि वह समाज, सत्ता, साहित्य सभी के प्रति विद्रोही बनकर अंत में फांसी का दंड पाता है। क्रांतिकारी विद्याभूषण का विद्रोह

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

राज्य के प्रति है तथा बाबा मदनसिंह भी राजसत्ता के प्रति विद्रोह भावना रखते हैं। किंतु इनके विद्रोह का दायरा सीमित है जबकि शेखर का विद्रोह सभी क्षेत्रों मे होने से असीमित है।

पीड़ा -

जीवन में किसी प्रेरक के अति या अल्पविकास अथवा परिवेश से असमायोजन के परिणाम स्वरूप पीड़ा का जन्म होता है। शेखर को अपने जीवन में शारीरिक पीड़ा से अधिक मानसिक-पीड़ा का सामना करना पड़ा है। माँ से नफरत, सरस्वती का ससुराल चले जाना, शारदा से प्रेमभंग और कुमार से विश्वासघात इन सब बातों से पता चलता है की शेखर का जीवन वेदनामय, पीड़ामय था।

कुछ भी हो शेखर हिंदी उपन्यासों में प्रस्तुत किए गए चरित्रों में विशिष्ट स्थान रखता है। उसका व्यक्तित्व अंतर्मुखी है तथा वह विद्रोही स्वभाव का है। वह 'अहंभाव' एवं 'कामभावना' से परिचालित एक विशिष्ट पात्र है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

4.2.2 **शशि :-**

'शेखर : एक जीवनी' उपन्यास की शशि प्रमुख स्त्री पात्र है। वह शेखर की मौसी विद्यावती की बेटी है। अज्ञेय ने अपने उपन्यास में जिस शशि को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है, वह अपने-आपमें एकदम अपूर्व, अद्वितीय अप्रतिम, अनोखी और अन्यत्र दुर्लभ है। यह यही शशि है जिसने अपने पति रामेश्वर से अपमानित एवं प्रताड़ित होने के बावजूद भी उसे निःस्वार्थ और सच्चे दिल से प्यार किया, लेकिन दुर्भाग्य शशि का और रामेश्वर का भी, जिसने उसे घर से बाहर निकाल दिया और रामेश्वर के घर से निष्कासित शशि को यदि किसी ने शरण दी तो वह था शेखर, जो शशि का सगा नहीं था, लेकिन जिसने भावना के स्तर पर शशि को दिल से चाहा था और शशि ने भी उसके जीवन को बढाने और बचाने में अपनेआपको ऐसा होम कर दिया था कि शेखर को कभी महसूस ही नहीं होने दिया कि वह उसकी सगी बहन नहीं है। शशि ने तो सगेपन का ऐसा परिचय दिया था, जैसे सगी बहनें भी नहीं दे सकती। शेखर के जीवन में अनेक प्रेमिकाएँ आती हैं और अपनी-अपनी स्मृतियाँ छोड़कर चली जाती हैं, परंतु शशि का साथ शेखर के जीवन के साथ सदा बना रहता है और

वह तब तक नहीं छूटता जब तक शशि को मृत्यु निगल नहीं जाती। शशि की मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ इसप्रकार है।

राह दिखाने वाली शशि -

शशि का अर्थ है चंद्र और चंद्र रात के घने अंधेरे में निकलता है और भूले-भटके राही को मंजिल दिखाता है। अपनी शीतलता से उसको तृप्ति करता है लेकिन इतना कुछ करने के बाद भी उसपर जो कलंक है वह दूर नहीं हुआ, वह आजीवन लगा ही रहा है। शशि एक ओर रामेश्वर की पत्नी, तो दूसरी ओर शेखर की प्रेमिका है। वह स्वयं को मिटाकर शेखर के बिखरे हुए व्यक्तित्व को एक स्वस्थ एवं सुनिश्चित पथ की और उन्मुख करने में योग देती है। शशि सदा शेखर के लिए अपनी निजता का हनन करती रही है। वह सदा शेखर को उसके कर्तव्यों की और ध्यान दिलाती रहती है। इधर रामेश्वर से विवाह करके उसे अपना सर्वस्व दे देती है। वह अपने जीवन को जलाकर सभी को उजाला देती है। फिर भी उसे कलंकित ही जीवन बिताना पडता है। शशि ही अज्ञेय जी की एक ऐसी दुर्लभ सृष्टि है, जो एक साथ बहन, स्त्री और माँ का प्यार देना जानती है और दूर रहकर भी अपने प्रेमी (शेखर) को बचाने तथा बढ़ाने का मोह नहीं त्याग पाती।

त्याग की साक्षात प्रतिमूर्ति -

शशि विवाहिता है, साथ ही प्रेमिका भी। उसमें अनुराग और त्याग दोनों गुण मौजूद हैं। शशि का त्याग अन्यतम है, अद्‌वितीय है। सामान्य वर्ग की तो बात ही करना व्यर्थ है। लेकिन शशि जिस वर्ग की है, उसमें भी ऐसी शशि ढूँढ निकालना टेढ़ी खीर जैसा है। शशि तो भावनात्मक अमर प्रेम की वह निशानी है, जिसने अपने शंकालु जीवन साथी रामेश्वर के द्‌वारा प्राप्त असहाय आघात एवं अपमान के विषैले घूँट को भी बिना किसी ना-नुकुर के पीकर तथा समाज की परवाह न कर, आजीवन शेखर के जीवन को विकसीत करने एवं बढ़ाने में अपने-आपको ऐसा भस्म कर दिया कि वह चुक गई, मिट गई और अवशेष के नाम पर यदि कुछ शेष भी रह गया है, तो वह है, उसके पवित्र प्रेम एवं परित्याग के राख की ढेरी। वह शेखर से प्रेम करती है पर अपनी माँ की मानरक्षा में स्वेच्छा से अनचाहे व्यक्ति के साथ विवाह बंधन को स्वीकार कर लेती है। वह अपने पति का दुर्व्यवहार सहन करती है

और अपनी पिटाई भी सहती है। अतः उसकी आत्मपीड़ा स्पष्ट होती है। इस प्रकार शशि त्याग की साक्षात प्रतिमूर्ति थी।

शारीरिक और मानसिक पीड़ा -

शशि को अपने जीवन में शारीरिक और मानसिक पीड़ाओं का सामना करना पडता है। शशि पाठकों को अपनी तीव्र वेदना के कारण प्रभावित किए बिना नहीं रह पाती। वह शेखर से प्यार करती थी, लेकिन माँ के कारण उसे रामेश्वर के साथ विवाह करना पडता है। उसका वैवाहिक जीवन दुःखमय होता है। जब रामेश्वर को मालूम हुआ कि उसकी पत्नी शशि, शेखर के प्रति आकर्षित है, और उन दोनों में प्यार की बेल लहलहा रही है तो वह आपे से बाहर हो गया और उसने शशि के पेट में ऐसी लात मारी कि उसका गुर्दा ही फट जाता है। उसने शशि के साथ सिर्फ बदसलूकी ही नहीं की, बल्की उसे पत्नी से परित्यक्ता बना दिया, जबकि सच्चाई यह है कि शशि ने अपने पति रामेश्वर को भी तहे दिल से और समर्पित भाव से प्यार किया था। शशि को अंत तक शारीरिक और मानसिक यातनाओंका शिकार होना पड़ता है।

विवेक और अनुराग की मूर्ति शशि -

शशि, शेखर की समवयस्क है, किंतु उसका विवेक और अनुराग बडा ही गहरा है। उसकी संवेदना बडी प्रशस्त और ज्ञान बडा विशद है। वह शेखर से प्यार करती थी, लेकिन माँ को समाज के तानों का शिकार न होना पडे इसलिए वह रामेश्वर से विवाह करती है। विवेक उसके समूचे जीवन में कूट-कूटकर भरा है लेकिन उसके विवेक में व्यथा है क्योंकि वह विवेक के कारण खुद दुःख सहती है। शेखर के साथ अनुराग होने के कारण वह पति के साथ कभी भी बूरा व्यवहार नहीं करती। वह अपने पति को सबकुछ स्वेच्छा से दे देती है। वह सदा शेखर को आगे बढ़ाने के लिए अपनी आहुति देती रहती है, क्योंकि वह स्त्री को ही पुरुष की प्रगति का एक मात्र माध्यम मानती है। वह एक साथ बहन, स्त्री और माँ का प्यार देना जानती है और दूर रहकर भी अपने प्रेमी शेखर को बचाने तथा बढ़ाने का मोह नहीं त्याग पाती। वह द्विधावस्था में उलझी हुई है क्योंकि वह नहीं चाहती कि शेखर से उसका

अनुबंध टूटे और वह यह भी नहीं चाहती कि पति रामेश्वर के साथ उसकी गृहस्थी टूटे। इस प्रकार शशि विवेक और अनुराग की मूर्ति है।

समर्पणशील -

शशि ही एक साथ बहन, स्त्री और माँ का प्यार दे सकने में सफल हुई है। वैसे उसने जिस त्रिकोणीय प्यार को निभाने में सफलता पाई है, वह बच्चों का खेल नहीं है। शेखर के प्रति तो वह पूर्णरूपेण समर्पित है और उसका समर्पण अद्‌वितीय भी है। शशि ने अपने पति रामेश्वर को भी तहेदिल से और समर्पित भाव से प्यार किया था। शशि को अपने भविष्य की कोई परवाह नहीं है, लेकिन शेखर के भविष्य के लिए तो वह प्रेरणा-स्त्रोत का काम करती है और निरंतर उसके जीवन की बाती उकसाने में व्यस्त दिखाई देती है। इस प्रकार शशि के अंदर समर्पण की भावना यह गुण दिखाई देता है।

कर्तव्य में तत्पर -

शशि बचपन से लेकर अंत तक एक कर्तव्य तत्पर नारी के रूप में ही हमारे सामने प्रस्तुत होती है। शशि सदा शेखर के लिए अपनी निजता का हनन करती रही है। वह सदा शेखर को उसके कर्तव्यों की और ध्यान दिलाती रहती है। शेखर की मानसिक स्थिति को वह जानती है और उसे तसल्ली देने के लिए दो बार शेखर से मिलने जेल में भी जाती है। वह खुद अपने काम में तत्पर रहती है। शेखर कहीं भटक न जाए इसलिए उसकी प्रेरणा बनकर एक अच्छा साहित्यकार बनने के लिए उसे प्रेरित करती है। वह शेखर को यह समझाती है कि संसार से अलग रह कर कोई भी व्यक्ति अधिक दिन तक काम का नहीं रहता इसीलिए वह शेखर को शादी के लिए उकसाती है। वह शेखर से कहती है-''तुम्हे एक साथी खोजना चाहिए, जो बराबर साथ चल सके, साथ क्लेश भोग सके और साथ सुख पा सके... क्लेश या सुख बडी बात नहीं है, बडी बात साथ की है ... साझा करने और सहने की क्षमता।''[15] इस प्रकार शशि अपने कर्तव्य में तत्पर दिखाई देती है।

आत्मपीड़नशील -

जो पात्र स्वयं को दु:खी करके सुख का अनुभव करता है, उसे आत्मपीड़नशील पात्र कहा जा सकता है। शशि हमेशा शेखर के बारे में सोचती रहती है। वह शेखर को लिखने के लिए प्रेरित करती है। उसका पति उसे मारता है, फिर भी वह अपना दु:ख भूलकर शेखर को आगे बढ़ने की सलाह देती है। शेखर की खुशी में ही उसकी खुशी है। इस प्रकार 'शेखर : एक जीवनी' उपन्यास का शशि एक आत्मपीड़नशील पात्र है।

मानसिक उलझन -

शेखर के जीवन में अनेक प्रेमिकाएँ आती हैं और अपनी-अपनी स्मृतियाँ छोडकर चली जाती हैं, परंतु शशि और शेखर युवावस्था से ही एक-दूसरे से आकर्षित है। शशि, शेखर की सगी न सही, चचेरी बहन तो है, इसके बावजूद भी इन दोनों में प्रेम पल्लवित एवं पुष्पित होता है। दोनों के बीच पल रहा प्रेम भावना के स्तर से आगे नहीं जाता। दोनों के बीच पल्लवित प्रेम आग लगाने जैसा ही है, इसीलिए वह न तो स्वस्थ रह पाया और न सफल। शशि को शेखर द्वारा 'बहनजी' कहना अच्छा नहीं लगता। जेल में जब शशि शेखर से मिलने जाती है तो शेखर को भाई की उपस्थिति के कारण कुछ बोल नहीं पाती। रामेश्वर द्वारा जूठे किए होने पर जब-जब शेखर के भावाकुल चुंबन अंकित होते हैं, शशि अपनी ही वेदना में, मानसिक उलझन में विव्हल हो उठी है। शशि का प्रेम उदात्त है।

शशि के चरित्र-चित्रण का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के पश्चात स्पष्ट होता है कि शशि, निर्मल, निष्कलंक एवं पवित्र है। शशि का निष्कलंक प्यार सदा अमर रहेगा।

'शेखर : एक जीवनी' तो बाल मनोविज्ञान का एक भरा-पूरा दस्तावेज है। शेखर और शशि के माध्यम से ' शेखर : एक जीवनी' में अज्ञेय जी ने मंनोवैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला है।

4.3 नदी के द्वीप उपन्यास में मनोवैज्ञानिकता :

'नदी के द्वीप' अज्ञेय जी का दूसरा उपन्यास है जिसे उन्होंने सन् 1951 में हिंदी साहित्य-जगत में उतारा। इसकी कथा एक दर्द भरी प्रेम कहानी है। 'नदी के द्वीप' समाज

के जीवन का चित्र नहीं है। एक अंग के जीवन का है, पात्र साधारणजन नहीं हैं, एक वर्ग व्यक्ति है, और वर्ग भी संख्या की दृष्टि से अप्रधान ही है। लेखक के मतानुसार यह उपन्यास उस समाज का उसके व्यक्तियों के जीवन का वह चित्र है, सच्चा चित्र है। वास्तव में 'नदी के द्वीप' में बौद्धिक प्रखरता के साथ भावों की गहराई में लेखक की पैठ, सूक्ष्मतम मनोवेगों की अनुभूतियों की मर्मस्पर्शी अभिव्यंजना आज भी पाठक को मोह ही नहीं लेती, स्तब्ध छोड़ जाती है उस पाठक को भी जो प्रतिकूल भाव लेकर ही उपन्यास को उठाता है। वैसे देखा जाय तो 'नदी के द्वीप' - 'शेखर : एक जीवनी' का विकसित रूप ही प्रतीत होता है, क्योंकि 'शेखर : एक जीवनी' का शेखर भी 'नदी के द्वीप' का भुवन हो सकता है। 'शेखर : एक जीवनी' में जिस गौरा को चार-पाँच वर्ष की बच्ची के रूप में अज्ञेय जी ने प्रस्तुत किया है, वही 'नदी के द्वीप' में तरुणी गौरा के रुप में दिखाई देती है। 'नदी के द्वीप' में भुवन, चंद्रमाधव, रेखा और गौरा प्रमुख पात्र हैं। यहाँ इन्हीं पात्रों के द्वारा 'नदी के द्वीप' उपन्यास में मनोवैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला गया है।

4.3.1 **भुवन :-**

'नदी के द्वीप' का कथानायक डॉ. भुवन कास्मिक रश्मियों की खोज करने वाला एक वैज्ञानिक है, जो सदा अपने शोध- कार्य में व्यस्त दिखाई पड़ता है। यों देखा जाए तो 'शेखर : एक जीवनी' का शेखर ही प्रोढ़ रूप में 'नदी के द्वीप' में भुवन के रूप में आया है और वह इस युग के विशिष्ट मध्यवर्गीय युवक मन का, उसकी आत्मा का भी व्यक्ति-चेतना का सच्चा प्रतीक है। डॉ. भगवत शरण उपाध्याय लिखते हैं "भुवन गम्भीर, विचारशील, शिष्ट, व्यक्तिनिष्ठ, भावुक, कामुक, एकान्त प्रिय, कमजोर, लोकग्राही, असामाजिक,विचारशील पंडीत है, जटिल प्रश्नों पर विचार करता है, सत्य-तथ्य के अंतर का विवेचन करता है।"[16] भुवन पुरातन मूल्यों में विश्वास नहीं रखता, आर्थिक रूप से स्वावलंबी है, अपनी प्रवृत्तियों का अनुसरण करता है। भुवन में कई मनोवैज्ञानिक गुण दिखाई देते हैं।

सौंदर्यप्रिय -

भुवन एक सौंदर्यप्रिय व्यक्ति है। नौकुछिया ताब के डाक बँगले में जब उन्मत रेखा कहती है - "मैं तुम्हारी हूँ, भुवन मुझे लो।"[17] तब सुंदरता की आड लेकर वह रेखा के समर्पण को अस्वीकार करता है। वह रेखा के दिलचस्प चरित्र के प्रति केवल बौद्धिक कौतुहल रखता है। किंतु प्रतापगढ़ स्टेशन पर रेखा के सहज भाव से ठेल कर गाड़ी पर सवार करा दिये जाने पर उस की कुहनी में स्पर्शित स्थल पर चुनचुनाहट होने लगती है और वह यह रूमानी कल्पना करता है कि रेखा ने वास्तव में उसे ठेला नहीं बल्कि खींचा था। इसमें भी वह सौंदर्य की भावना रखता है। भुवन प्रेम को वासना का पर्याय नहीं मानता है। भुवन ने पहली बार रेखा को चंद्र के यहाँ देखा था और उसने रेखा की सुंदरता का वर्णन करते हुए कहा था कि - 'रेखा के पास रूप भी है और बुद्धि भी है, किंतु मानो तीव्र संवेदना के साथ गुँथी हुई और रूप एक अदृश्य, अस्पृश्य कवच-सा पहने हुए हैं, पर इस आरंभिक धारणा को उसने तूल नहीं दिया था।"[18] इस प्रकार भुवन में सौंदर्य प्रेम की प्रधानता है।

कार्य के प्रति तत्पर -

भुवन एक वैज्ञानिक है, जो सदा अपने शोध-कार्य में व्यस्त दिखाई पडता है। भुवन सेना में भर्ती हो जाता है। भारतीय भूमि पर जापानी बम गिरने पर युद्ध में शामिल होकर सक्रिय रूप में वह अपना कर्तव्य निभाता है। भुवन का नैतिक विवेक अधिक प्रबुद्ध और सशक्त है। इसलिए वह रेखा के प्रति आकृष्ट होकर भी एक सकरूण परिस्थिति में द्रवित होकर ही उससे यौन संबंध कायम कर पाता है। गर्भपात के बाद रेखा गंभीर रुप से अस्वस्थ हो जाती है। भुवन रेखा की मदद करता है। भुवन का कर्तव्यनिष्ठ, व्यावहारिक, स्नेहल एवं सेवापरायण रूप इस प्रसंग में उजागर होता हैं। इस प्रकार भुवन अपने कार्य के प्रति तत्पर दिखाई देता है। तत्परता यह मनुष्य का प्रमुख गुण है।

संवेदनशील -

भुवन में बालसुलभ सरलता, संवेदनशीलता और अनुभूतिगत ईमानदारी है, जिससे रेखा और गौरा दोनों आकर्षित होती हैं। वह मिलन के चरम क्षणों में भी अनुशासक बरकरार रखता है। वह उसके परिणाम को भोगने के लिए भी प्रस्तुत है। भुवन और रेखा दोनों बिना शादी के ही पति-पत्नी की तरह रहते हैं। रेखा का पैर भारी हो जाता है। भुवन आनेवाली / आनेवाले के प्रतीक्षा में बैठता है। वह उसे स्वीकार करने के लिए तैयार होता है। वह एक संवेदनशील व्यक्ति है। समाज से उसे कोई डर नहीं है। भुवन में गहरा अनुशासन और मर्यादा का भाव है। रेखा ने अपने गर्भ में बढ़ रहे भ्रुण को नष्ट करवा दिया। इसी से भुवन थोडा विचलित दिखाई देता है, लेकिन बाद में वह वस्तु-स्थिति को समझकर सामान्य और शांत हो जाता है। इस प्रकार भुवन में संवेदनशीलता दिखाई देती है।

काम-पीड़ित -

' नदी के द्वीप ' का नायक भुवन काम भावना से पीड़ित दिखाई देता है। भुवन का रेखा के कंधे और कुचों को सहलाना, रेखा के अंग-प्रत्यंग को चूमना आदि से स्पष्ट है कि भुवन रेखा को पूरी तरह से भोग रहा था और रेखा ने अपने-आपको पूरी तरह से भुवन के हवाले कर दिया था। भुवन की कामभावना इस प्रकार दिखाई देती है - ''भुवन ने अपना माथा रेखा के उरेजों के बीच में छिपा लिया, उनकी गरमाई उसके कानों में चुन-चुनाने लगी, फिर उसके ओठ बढ़कर रेखा के ओंठों तक पहुँचे, उन्हें चूमा प्रतिचुंबित हुए।''[19] इन पंक्तियों से काम भावना की जो चरम परिणति होती है, उसकी झलक आक्रमक यौन संबंध से दिखाई देती है।

विवशता -

मनुष्य को जिंदगी मे अनेक समस्याओंका सामना करना पडता है। वह जिंदगी से तंग आकर पलायनवादी बन जाता है। भुवन एक ऐसा पात्र है जो जीवन से पलायन तो नहीं करता परंतु विवश होकर सैन्य में भरती हो जाता है। वह रेखा से प्यार करता था, लेकिन अंत में गौरा के प्रति समर्पित होने के लिए मानो विवश है तथा कहता हैं - ''कितना बड़ा है

जीवन, कितना विस्तृत, कितना गहरा, कितना प्रवाहमान, और उसमें व्यक्ति की ये छोटी-छोटी इकाइयाँ प्रवाह से अलग जो कोई अस्तित्व नहीं रखती, कोई अर्थ नहीं रखती, फिर भी संपूर्ण हैं, स्वायत्त है, अद्‌वितीय है और स्वतः प्रमाण है, द्‌वीप से द्‌वीप तक सेतु है, फिर भी वह दोनों को मिलाता है, एक करता है... गौरा, मैं तुम्हारी ओर हाथ बढाता हूँ अनुरोध के हाथ, क्या तुम अपने हाथ मेरी ओर बढ़ाओगी, कि इस प्रकार हम एक सेतु बन सकें जिस पर ईश्वर अगर है तो उसका आसन है ?''[20] भुवन सेना में भरती हो जाता है, फिर आकर गौरा का स्वीकार करता है। इस प्रकार मनुष्य को विवशता कहाँ से कहाँ तक पहुँचाती है यह भुवन का चरित्र पढ़ने के बाद दिखाई देता है।

आकर्षित व्यक्तित्व -

भुवन का व्यक्तित्व आकर्षित था। भुवन एक साथ वैज्ञानिक और साहित्यिक दोनों है। रेखा से उस का परिचय लंबा नहीं था। बल्कि परिचय कहलाने लायक भी नहीं था, क्योंकि एक सप्ताह पहले ही अपने मित्र चंद्रमाधव के घर पर एक छोटी चाय-पार्टी में इन की पहली भेंट हुई थी। और उस के बाद दो-तीन बार हजरतगंज के कोने पर या काफी हाऊस में, उन का कुछ वार्तालाप हुआ था। लेकिन रेखा पहली मुलाकात में ही भुवन के आकर्षित व्यक्तित्व पर प्रभावित हो गई थी। गौरा भी भुवन के व्यक्तित्व पर आकार्षित थी। रेखा और गौरा दोनों भुवन के साथ प्यार करती है। अंत में भुवन का गौरा के साथ विवाह होता है। इस प्रकार भुवन का व्यक्तित्व आकर्षित होने के कारण कोई भी व्यक्ति पहली मुलाकात में ही उससे प्यार करती थी।

इस प्रकार भुवन के व्यक्तित्व में सौंदर्य प्रियता, विवशता, संवेदनशीलता, कामभाव, व्यावहारिकता और आकर्षितता इन मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का अंतर्भाव किया जाता है।

4.3.2 **चंद्रमाधव :-**

चंद्रमाधव एक मध्यवर्गीय परिवार का है। कॉलेज की पढ़ाई छोड़ने के बाद एक साल के भीतर ही मैट्रिक और भूषण पास। चंद्र एकदम स्वार्थी है, गिरा हुआ है, क्योंकि जब वह अपने बीबी-बच्चों का नहीं हुआ तो रेखा और गौरा का कैसे हो सकता है? चंद्रमाधव

का प्यार एकतरफा रहता है। अपनी वासना की तृप्ति के लिए वह रेखा को और गौरा को अपने जाल में फँसा लेना चाहता है, लेकिन वह अपनी इस चाल में भी कामयाब नहीं हो पाता। चंद्रमाधव 'नदी के द्वीप' का दूसरा प्रमुख पात्र है। अज्ञेय ने उसका चित्रण खलनायक के रूप में किया है। पेशे से चंद्रमाधव पत्रकार है। वह भुवन का कॉलेज का सहपाठी रहा है। उसमे हमेंशा सनसनी खोज करने की लालसा रही है। इसी सनसनी की तलाश में वह आफ्रिका, इटली, जर्मनी, चीन, कोरिया आदि कई देशों के दौरे भी कर चुका है। अस्थिर मन के कारण वह किसी भी बात पर स्थिर नहीं रह पाता न अपने गृहस्थी के प्रति, न अपने पेशे के प्रति, न अपने विचारों के प्रति। हारकर वह बंबई चला जाता है और वहीं पर एक प्रसिद्ध फिल्मअभिनेत्री से विवाह करता है। चंद्रमाधव के अंदर सनसनी खोज की चाह, कामुकता, असफल प्रेमी, रौब जमाने वाला, ईर्ष्या-भाव, भोगवादी, निराशावादी यह मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ दिखाई देती है।

सनसनी खोज की चाह -

चंद्रमाधव एकदम मधुप वृत्ति का जीता-जागता उदाहरण रहा है। नित नई-नई महिलाओं के सपने देखता फिरता रहा है। उसने सनसनी खोजी है "असल में उसने जीवन खोजा है, तीव्र बहता हुआ। प्लवनकारी जीवन, और वह उसे मिला कहाँ है ? मिली हैं यह छोटी-छोटी टुच्ची अनुभूतियाँ, चुटकियाँ और उसके किस दोष के कारण ? प्यार नहीं, बीबी-बच्चे स्वातंत्र्य ? नहीं, तनखाह, जीवनानंद ? नहीं, सहुलियत, घर, जेब-खर्च, सिनेमा, पान-सिगरेट, मित्रों की हिर्स..."[21]

चंद्रमाधव उपन्यास के आरंभ से अंत तक सनसनी खोज में ही दिखाई देता है। सनसनी की तलाश में वह आफ्रिका, इटली, जर्मनी, चीन और कोरिया आदि कई देशों के दौरे भी कर चुका है। परित्यक्ता रेखा को नौकरी की तलाश में सहायता करने के पीछे भी उसका उसे पाने का सनसनी पूर्ण विचार ही छिपा रहता है, न कि किसी प्रकार की सहायता का भाव। सनसनी की खोज में उसका मन भटकता है। न वह गौरा के प्यार में सफल हो पाता है, न वह रेखा के प्यार में सफल हो पाता है। अपनी अतृप्त वासना की आग बुझाने के

लिए फिर से पत्नी की ओर अग्रसर होता है। लेकिन उसके पास भी उसका मन नहीं लगता। अंत में बंबई जाकर किसी फिल्म अभिनेत्री से विवाह बद्ध होकर एक नई सनसनी पैदा कर देता है। इस प्रकार उसका पूरा जीवन ही सनसनी का दस्तावेज है।

अहंकारी -

चंद्रमाधव सनसनी खोज पात्र है। वह अपनी अतृप्त वासना की आग बुझाने के लिए, रेखा और गौरा के पिछे लगता है। वह अपने आपको भुवन से श्रेष्ठ साबित करने का प्रयास करता है। वह चाहता है कि गौरा और रेखा उसे भुवन से भी श्रेष्ठ मानकर प्यार करें। लेकिन उसकी यह श्रेष्ठता की भावना ग्रंथि बन जाती है तथा वह दंभी, अहंकारी बनता है।

कामभावना -

आफ्रिका, इटली, जर्मनी, चीन और कोरिया आदि देशों के दौरे करने से वहाँ का भोगवाद और निराशावाद उसके मन में गहरा बैठ गया था। परिणाम स्वरूप वह अपनी पत्नी, रेखा तथा गौरा को सिर्फ भोग की वस्तु समझता है। नित नई-नई महिलाओं के सपने देखता फिरता रहता है। चंद्रमाधव पत्नी से कामभावना तृप्त होने के बाद, पत्नी और बच्चों को छोडकर घर से संन्यास लेता है। वह रेखा और गौरा के प्रति आकर्षित हो जाता है। लेकिन वह उनका भोग नहीं ले सकता। क्योंकि उन्होंने कभी भी चंद्रमाधव से प्यार नहीं किया। रेखा और गौरा को हासिल करने में असफल हो जाने के बाद वह फिर से अपनी पत्नी के पास चला जाता है। उसकी मनोभावनाओं का विचार किए बिना ही मनोविकृत रूप में उसे भोगता है। अपनी इच्छाएँ पूर्ण होने पर फिर से पत्नी को छोड़ देता है। इस प्रकार कामभावना उसके अंदर कूट-कूटकर भरी हुई थी।

स्वार्थी -

चंद्रमाधव एक स्वार्थी वृत्ति का इन्सान है। रेखा अपने पति से अलग हो गई थी। रेखा कहीं नौकरी पकड़ती तो कहीं छोड़नी पडती थी। चंद्रमाधव रेखा के प्रति सहानुभूति दिखाता है। वह शिकायत करता है कि उसने उसकी सहायता क्यों नहीं ली। रेखा को चंद्रमाधव ने एक स्कूल में नौकरी दिला दी थी और बार-बार उससे मिलने आया करता था।

रेखा को नौकरी दिलाने में चंद्रमाधव की स्वार्थी वृत्ति दिखाई देती है। क्योंकि वह रेखा को पाना चाहता था। वह रेखा के अकेलेपन का फायदा उठाना चाहता था। अपने स्वार्थ के पूर्ति के लिए वह किसी की भी सहायता करने के लिए तैयार हो जाता था।

असफल प्रेमी -

फूल चाहे जितना खूबसूरत क्यों न हो, भौरा केवल उसी एक खूबसूरत फूल के पीछे नहीं रहता वह तो उसका रस चूसकर किसी दूसरे खूबसूरत फूल पर रस चूसने के लिए मंडराने लगता है। वह कब किसी का होकर रहा है। ठीक यही गति चंद्रमाधव की रही। चंद्रमाधव रेखा को अपनाना चाहता था। वह रेखा से प्यार करता था। उसका प्यार एकतरफा था। अपनी वासना की तृप्ति के लिए वह रेखा को अपने जाल में फँसा लेना चाहता है, लेकिन वह अपनी इस चाल में भी कामयाब नहीं हो पाता। रेखा के प्यार में असफल होने के बाद वह अपना ध्यान गौरा कीओर ले जाता है। लेकिन गौरा भी चंद्रमाधव को घास नहीं डालती। न वह पत्नी का रह जाता है, न रेखा का और न गौरा का। वह रेखा को पहाड़ पर सफर के लिए जाने की योजना बनाता है। वहाँ जाकर वह अपने मन के दमित विचारों को रेखा के सम्मुख व्यक्त करना चाहता है, परंतु उसमें वह नाकामयाब रहता है। चंद्र अपने मन का पूरा पाप, कुंठित वासना, प्रेम एक प्रेमपत्र पर उतारता है। वह प्रेम पत्र द्वारा अपना प्रेमजाल रेखा पर फेंकता है। लेकिन रेखा उसे इन्कार कर देती है। इस प्रकार वह रेखा को पाने में असफल रहता है।

ईर्ष्या-भाव -

ननुष्य के अंदर ईर्ष्या-भाव यह गुण सहजता से निर्माण होता है। चंद्रमाधव भी ईर्ष्या-भाव से ग्रस्त है। वह रेखा से प्यार करता था लेकिन रेखा भुवन से प्यार करती थी। इसी के कारण भुवन के प्रति चंद्रमाधव के मन में ईर्ष्या निर्माण हो जाती है। वह रेखा के साथ छुट्टियाँ मनाने के लिए पहाड पर जाना चाहता है। वह जानता है की रेखा पहाड पर अकेली नहीं आ सकती, इसलिए वह भुवन को भी साथ लेने की योजना बनाता है। भुवन से उसकी पुरानी मैत्री थी, ठीक है, पर मैत्री-मैत्री में भी फर्क होता है, और रेखा के साथ भुवन की बात वह कभी सोच ही नहीं सकता था। दोनों का परिचय वह उतना ही चाहता था

जिस से रेखा को तसल्ली हो जाय, पर भुवन की मनहूसियत उस पर हावी न हो जाय, ऐसा चंद्रमाधव चाहता था। गौरा पर मोहित चंद्रमाधव गौरा को भुवन की और आकर्षित देखकर भुवन पर जलता है। भुवन के परामर्श से गौरा ने शादी के लिए इंकार कर दिया था। चंद्रमाधव पत्र द्वारा गौरा को भुवन के खिलाफ भडकाता है। इसके पीछे चंद्र की एक ही इच्छा हो सकती है कि किसी भी तरह गौरा भुवन से अलग हो जाए। इस प्रकार चंद्रमाधव के मन में भुवन के प्रति ईर्ष्या भाव दिखाई देती है।

भोगवादी -

चंद्रमाधव अपने मन की अतृप्त वासना की तृप्ति के लिए पूरे उपन्यास में भोग के पीछे लगा दिखाई देता है। भोगवादी वृत्ति से वह सभी की ओर आकर्षित होता रहा है। वह दूसरों की बिबियों के साथ रंगरलियाँ मनाने का शौकीन है। वह अपनी पत्नी, रेखा, गौरा और अभिनेत्री चंद्रलेखा को उसने भोगवाद का ही केंद्र माना है। वह केवल भूख के समय ही पत्नी को ओढ लेता है। इससे स्पष्ट होता है कि भोग के लिए वह कितना गिरा हुआ है।

पलायनवादी -

चंद्रमाधव पर युरोप का पलायनवाद और निराशावाद पूरी तरह से छाया हुआ है। वह विदेशी स्वाधीनता की ही प्रशंसा करता है। एक पत्र द्वारा युरोप के पलायनवाद को और निराशावाद को स्वीकारता है। भुवन एक वैज्ञानिक होकर भी सन 1939 में यूरोप में आरंभ हुए युद्ध में संस्कृति की रक्षा करने की बात सोचता है। लेकिन चंद्रमाधव एक जिम्मेदार पत्रकार होकर भी इस युद्ध में संस्कृति विनाश के लिए मनोकामना करता है। पत्नी, रेखा और गौरा के प्रेम में असफल होने के बाद चंद्रमाधव निराश होता है, और वह पलायनवादी वृत्ति का होकर संस्कृति विनाश के सपने देखने लगता है।

अवसरवादी -

चंद्रमाधव के बारे में अज्ञेय लिखते हैं कि वह मधुप वृत्ति का हैं। किसी एक महिला के साथ सदा जुड़कर रहना उसे कभी रास नहीं आया। अपनी विवाहित धर्म पत्नी कौशल्या से मन उचट जाने के बाद वह घर से नाता तोड़ लेता है, जबकि उस पत्नी से उसके दो बच्चे

भी हुए थे और किसी भी प्रकार का उनमें कोई मनमुटाव और झगड़ा भी नहीं हुआ था। पत्नी से नाता तोड़ने के बाद वह रेखा की ओर आकर्षित हुआ और जब वहाँ भी रेखा ने उसे घास नहीं डाली, तब वह मन-ही-मन गौरा को चाहने लगा। इस प्रकार चंद्रमाधव एक अवसरवादी प्रवृत्ति का पात्र है।

4.3.3 **रेखा :-**

अज्ञेय कृत 'नदी के द्वीप' की रेखा विशेष पात्र है। 'नदी के द्वीप' का कथानक चरित्र नायिका रेखा के व्यक्तित्व को केंद्र में लेकर उसके चारों ओर घूमता है। रेखा की आयु सत्ताईस के लगभग होगी, वह विवाहिता है। विवाह के दो-एक वर्ष बाद ही पति-पत्नी अलग हो गये। कहा जाता है विवाह से पहले रेखा का किसी से प्रेम था पर उससे विवाह हो नहीं सकता था, उसने बाद में दूसरा विवाह कर लिया तो मर्माहत रेखा ने उसके माता पिता ने जो वर ठीक किया उसे चुपचाप स्वीकार कर लिया पर उसे वह दे न सकी जो पति को देना चाहिए। कोई यह कहते हैं कि पति की ही आदतें शुरू से खराब थी और वह पत्नी के प्रति अत्यंत उदासीन था। वह विदेशी रबर कंपनी मे अच्छी नौकरी स्वीकार कर के विदेश चला जाता है। वहाँ उस के साथ कोई स्त्री भी रहती थी। आरंभ में पति द्वारा परित्यक्ता नायिका रेखा भुवन और चंद्रमाधव के बीच भटकती है। वह भुवन के प्रति पूर्णतः समर्पित होकर, फिर शारीरिक रूप से अलग हो जाती है। रेखा मध्य वर्ग की सुशिक्षित, संभ्रांत तथा सपनों की एक लंबी लड़ी गूँथने वाली विचारशील नायिकाओं में सर्वोपरि है। वह गंभीर, भावुक, साहसी, एकांतप्रिय, विचारशील, शिष्ट एवं असाधारण व्यक्ति की महिला है। भुवन जहाँ एक ओर जीवन की नदी पर सेतु बाँधने की कल्पना को बडी मूर्खता समझता है, वहीं रेखा उसे सुख और सिद्धि का साधन मानती है। उसकी मनोवैज्ञानिक शारीरिक विशेषताएँ इस प्रकार है।

नामकरण की सार्थकता -

'नदी के द्वीप' उपन्यास की रेखा प्रमुख नायिका है। रेखा बिंदू की गतिशील अभिव्यक्ति है। उसमें न मोटाई है, न चौड़ाई, वह मात्र अस्तित्व है, सत्ता है। रेखा गतिशील होती है, वह किसी भी बंध में बंध नहीं सकती। वह अपना एक नया अस्तित्व

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

बनाती है। वह अपना नामकरण सार्थक करती है। अज्ञेय जी ने अन्य स्त्री पात्रों को प्रतीक रूप में जिस प्रकार अभिव्यक्ति प्रदान की है उसी प्रकार रेखा को भी प्रतीक अर्थ में प्रस्तुत किया है। उन्होंने रेखा नामकरण ही प्रतीकात्मक किया है।

त्याग की प्रतिमूर्ति -

भुवन ने पहली बार रेखा को चंद्र के यहाँ देखा था और तब से वह उसके साथ प्यार करने लगा था। रेखा भी भुवन के साथ प्यार करती थी। भुवन के कारण उसका पैर भारी हो गया था। गौरा भी भुवन से प्यार करती थी। जब इसकी खबर रेखा को मिलती है, तब वह अपना बच्चा गिरा देती है। भुवन के प्रति गौरा के प्यार का संकेत मिलते ही वह बिना किसी ईर्ष्या के गौरा के लिए पथ प्रशस्त कर देती है। वह हमेशा भुवन और गौरा के हित में ही सोचती है। रेखा का प्रेम उदात्त है। वह एक त्याग की प्रतिमूर्ति के रूप में हमारे सम्मुख प्रस्तुत होती है।

समर्पणशील -

रेखा की शादी डॉ. रमेश चंद्र से हो गई थी, लेकिन इसके बावजूद भी वह भुवन के प्रेम-मोह से मुक्त नहीं हो पाई थी, वह आज भी उसे ही, सिर्फ उसे ही मन से प्यार करती है, उसके लिए उसने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया है, रेखा के लिए भुवन के प्यार के सामने सारा श्रीमतीत्व व्यर्थ प्रतीत होता है। वह असाधारण है, उसमें प्रणयकांक्षा है, पर दीनता नहीं, वह अपने आप को भुवन जैसे शालीन गंभीर, संवेदनशील और विद्वान व्यक्ति को समर्पित करने में विश्वास करती है, वह भुवन के प्रेम में पूरी तरह पगली हुई तो है, लेकिन उससे विवाह बंधन में बँधना योग्य नहीं समझती और इसीलिए वह डॉ. रमेश से शादी कर लेती है।

संघर्ष की भावना -

रेखा ने अपने जीवन में हमेशा संघर्ष ही किया है। वह अपने पति के पास नहीं रहती। स्वतंत्रता के कारण और अकेले होने के कारण नौकरी करती है और सफर करती रहती है। सुशिक्षित डॉक्टर भुवन में उसे अपने स्त्रीत्व की तृप्ति की संभवना दीखती है।

जहाँ-जहाँ मौका मिला वहाँ-वहाँ उसके साथ हो जाती है। एक दिन तुलियन झील में उसकी मनोकामना तृप्त होती है। विवाहिता होने पर भी एक व्यक्ति से प्रेम, पति से तलाक और प्रेमी को वस्त्रों के समान बदलना आदि से रेखा की संघर्षपूर्ण भावना दिखाई देती है।

कामभावना -

रेखा जीवन के प्रवाह से सदा नहीं लड़ सकती थी। उसकी भावानुभूति संबंधी तीव्रता अविचल रहती है। सेक्स की पीड़ा के अंतर्गत ही आत्मपीड़ा की अभिव्यक्ति में सर्वाधिक प्रभावात्मकता के साथ अभिव्यक्त हुई है। हेनेंद्र से विच्छिन्न हुई रेखा प्रबुद्ध रोमान्स की खोज में भुवन से आ मिलती है। रेखा तुलियन झील में अपने आपको भुवन के हवाले करती है, और अपनी वासना की तृप्ति कर देती है। आत्मपीड़ा से आभूषित रेखा दिल्ली में भी तुलियन की स्मृति की प्रतिछाया देखना चाहती है। वह निश्चित करती है- ''वह घूमने जाएगी जमना की रेती में जहाँ बैठकर भुवन ने उसका बालू का घर बनाया था। बारिश से रेत जम गई होगी, वहाँ बैठकर वह साँझ घिरती देखेगी... दिल्ली की साँझ तुलियन की नहीं है, पर तारे वही होंगे : उन्हें देखते वह अपने को मिटा दे सकेगी, उनकी टिमटिमाहठ में वह सिहरन पा सकेगी, जो भुवन का आत्म-विस्मृत स्पर्श...।''[22] स्पष्ट है कि दोनों बिना शादी के ही पति-पत्नी की तरह रहते हैं। इस प्रकार रेखा की काम भावना स्पष्ट हो जाती है।

वर्तमान पर विश्वास -

रेखा भविष्य के प्रति उदासीन दिखाई देती है। वह वर्तमान को ही मानना चाहती है। रेखा के अनुसार- ''मैंने पहचाना कि तुम हो, सचमुच हो, कि तुम्हीं को मैंने समर्पण किया है... भविष्य मैं अब भी नहीं मानती-यह भी नहीं जानती तुम्हारे जीवन में आई भी हूँ कि नहीं, मैंने बार-बार कहा है कि भविष्य नहीं है, केवल वर्तमान का प्रस्फुटन है... जब तक जो है, उसे सुंदर होने दो भुवन, जब वह न हो, तो उसका न होना भी सुंदर हो ...।''[23] स्पष्ट है कि रेखा भविष्य को नहीं मानती। वर्तमान को ही सच मानकर वह उसी में जीना ठीक समझती है।

आत्मपीड़नशील -

रेखा में आत्मपीड़न यह मनोवैज्ञानिक गुण दिखायी देता है। स्वयं को दु:खी करके सुख का अनुभव करने वाले पात्र को आत्मपीड़नशील कहा जाता है। रेखा भुवन से प्यार करती है, लेकिन जब उसे भुवन और गौरा के प्यार के बारें में पता चलता है, तब वह अपना दु:ख समेटे हुए उन दोनों को शादी के लिए तैयार करती है। क्योंकि इसीसे उसे सुख मिलता है।

पुनर्विवाहिता -

पुनर्विवाह के पश्चात् भी भुवन के प्रति रेखा के दिल में प्यार के अँकुर प्राणवान हैं। वह अब भी भुवन के प्रति समर्पित है और उसे प्यार करती है, उसने जिस गहराई से भुवन को प्यार किया है, उसे चाहा है और चाहती है, वैसी गहराई से उसने अपने पति को भी प्यार नहीं किया और न चाहा, पुनर्विवाह तो मात्र जीवन के साथ एक समझौता है, रेखा का प्यार दर्द से ओत-प्रोत दिखाई देता है, लेकिन वह उसी दर्द में प्यार को आज भी जीवित रखे हुए हैं, उसका प्यार मारकर भी अंततः मरता नहीं, लहलहाता हुआ प्रतीत होता है, क्योंकि पुनर्विवाहिता होने के बावजूद भी वह भुवन को अपने दिल रूपी मंदीर में आराध्य की तरह संजोए हुए हैं, दरअसल भुवन के प्रति उसका प्यार शत-प्रतिशत खरा और सच्चा है, इसीलिए वह अपने प्यार में अद्‌वितीय, अप्रतिम एवं असाधारण है।

प्रभावशाली व्यक्तित्व -

अज्ञेय के हाथों रेखा का व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली बन गया है- इतना प्रभावशाली कि उसके चमक के सामने अन्य पात्र निस्तेज और निष्क्रिय हो गए हैं। गंभीरतापूर्वक विचार करें तो रेखा में प्रखर अग्निकुंड है, जो निष्ठुर मानवद्रोही सामाजिक व्यवस्था को भस्मीभूत कर डालना चाहती है। रेखा अज्ञेय जी की अमर नायिका है और उसके जैसा चरित्र उपन्यास भर में कहीं दिखाई नहीं देता। वह असाधारण है, उसमें प्रणयकांक्षा है, पर दीनता नहीं। रेखा पुरुष प्रधान संस्कृति की अन्याय कारक बेडियाँ

काटकर अपनी मर्जी के अनुसार स्वच्छंदी जीवन जीने की प्रेरणा देनेवाला स्त्री पात्र है। इस प्रकार रेखा एक प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्त्री पात्र है।

रेखा का त्यागमयी एवं उदात्त दृष्टिकोण, आत्मनिर्भयता उसे प्रभावशाली व्यक्तित्व की रुप में प्रस्थापित करता है।

4.3.4 **गौरा :-**

'नदी के द्वीप' अन्य प्रमुख स्त्री पात्रों में गौरा एक हैं। गौरा जब पाँच-छ : वर्ष की थी, भुवन उससे तभी से परिचित था। गौरा सन् 1932 में मैट्रिक में पहुँच गई। मैट्रिक प्रथम श्रेणी में पास करके कॉलेज में पढने लगी थी। गौरा ने विधिवत संगीत की पढाई पूरी की थी। अंतिम बार उसके दर्शन एक संगीत शिक्षिका के रूप में होते हैं। अपने गुरू भुवन के प्रति उसका अनुराग बढता जाता है। भुवन को अपना गुरू, सखा, ईश्वर सबकुछ मानकर उसकी आराधना करती है। पूरे उपन्यास में वह अपने दु:खों को छिपाकर दूसरों को हँसते हुए देखना चाहती है। गौरा हर हाल में भुवन के साथ जीवन जीने के लिए उद्यत है। उसे भुवन में देवत्व की गंध निहित दिखाई देती है और वह उसे पूज्य मानती है। भटके हुए भुवन का वह सहारा बन जाती है। गौरा के चरित्र में त्याग, प्रतिभासंपन्नता, संवेदनशीलता, शालीनता और समर्पण की भावना आदि कई गुणों का सामंजस्य पाया जाता है। उसके चरित्र को मनोवैज्ञानिक धरातल पर प्रस्तुत किया जा सकता है।

गौरा का प्रतीक -

गौरा अर्थात भारतीय पत्नीत्व का प्रतीक है-पार्वती। भारतीयता का प्रतीक अनुराग, दायित्व और भक्ति इन सबका समन्वय गौरा में निहित है। भुवन प्राय: कहता, "तुम्हारा नाम जुगनू है, गौरा भी कोई नाम होता है भला?" तब गौरा कहती है-"गौरा तो देवी पार्वती का नाम है, हिमालय की चोटी पर रहती है वह।"[24] प्रिय की खुशी के लिए चाहे जो करना पड़े इस भारतीय नारी की संस्कृति का पालन गौरा करती हुई दिखाई देती है। निष्ठा, आस्था, विवाह में स्थिरता, संयम और कला सभी गुण उसमें विद्यमान है।

विचारशील नारी -

गौरा महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए भुवन के मार्गदर्शन का सहारा भी लेती है। गौरा के माता-पिता ने उसके विवाह के लिए एक लड़का देखा था। गौरा इससे असमंजस में थी और कोई निर्णय नहीं कर पाती थी, इसीलिए उसने भुवन से परामर्श लिया था। संगीत शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात वह अपने माता-पिता पर बोझ नहीं बनना चाहती। अतः नौकरी स्वीकार करती है। भुवन और रेखा का प्यार देखकर, वह रेखा को कभी भी अपने पथ की बाधा नहीं समझती, बल्कि उसे वह पूरा सम्मान देती है। रेखा के अशीर्वाद एवं स्नेह के आगे गौरा नतमस्तक है। गौरा के मन में रेखा दीदी के प्रति आदर एवं स्नेह का भाव है। गौरा अपने उदात्त विचार, समर्पण और साधना के कारण सबसे श्रेष्ठ साबीत होती है क्योंकि उसमें विचारों की प्रौढता एवं संयम है।

बहुमुखी प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व -

गौरा मैट्रिक प्रथम श्रेणी में पास होती है। वह भुवन से साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए मिलती रहती है। गौरा ने संगीत की पढ़ाई भी शुरू कर दी थी। वह नाटक वगैरह के बारे में भी भुवन से परामर्श लेती है। चंद्रमाधव के पत्र का उत्तर देते समय जब वह 'स्वाधीनता' इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करती है तब उसकी प्रतिभासंपन्नता और भी अधिक झलकती नजर आती है। जब वह जानती है कि संगीत शिक्षा के साथ संस्कृत का अध्ययन भी आवश्यक है तो तब वह संस्कृत का अध्ययन भी करती है। भुवन और चंद्रमाधव के बीच जब गौरा की शादी के संदर्भ में विचार-विमर्श चलता है तब भुवन चाहता है कि गौरा की शादी जिससे भी होगी वह बहुत ही भाग्यवान होगा। आगे चलकर वह भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व भी करती है। इस प्रकार गौरा एक बहुमुखी प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व वाली स्त्री पात्र है।

संयमी -

गौरा परिस्थिति से समझौता करना जानती है। संयमी व्यक्तित्व के कारण वह किसी से भी ईर्ष्या नहीं करती। वह भविष्य में आस्था मानकर वर्तमान में दुःख झेलती है। भुवन ने

हर एक बात गौरा को बता दी कि भुवन का और रेखा का प्यार किस तरह पल रहा था। रेखा के साथ काफी पीना, तुलियन में चार दिन रहने की बात, आपरेशन वाली बात। यह सब सुनकर गौरा कहती है – ''मैं सोच रही थी किसी तरह, कुछ भी करके, अपने को उत्सर्ग करके आपके ये घाव भर सकती–तो अपना जीवन सफल मानती।''[25] गौरा भुवन के कपट को कम करने में काम आयी तो अपना सौभाग्य मानती है। चाहकर भी भुवन उससे दूर भागता रहता है, परंतु फिर भी गौरा कोई शिकायत नहीं करती। क्योंकि परिस्थिति कैसी भी हो संयम के साथ उसका डटकर मुकाबला करना गौरा की एक प्रमुख विशेषता है।

समर्पणशीलता -

गौरा भुवन के आहत मन की मरहमपट्टी करने के लिए आतुर दिखाई देती है, वह अपने–आपको भुवन के लिए समर्पण कर देने में ही अपने जीवन की सफलता मानती है। यह समर्पण भुवन के प्रति पल रहे प्यार की ही परिणति है, इसीलिए वह कहती है, ''सचमुच वह भुवन का दर्द धो देने के लिए कुछ भी कर सके, तो सहर्ष तैयार है,...सचमुच मेरे जीवन का सबसे बडा इष्ट यही है कि तुम्हें सुखी देख सकूँ–तुम्हारे प्राण ठीक कर सकूँ, मेरे स्नेह–शिशु, मैं तुम्हारे ही लिए जीती हूँ, क्योंकि तूमसे जीती हूँ...।''[26] इससे यही संकेत मिलता है कि गौरा हर हाल में भुवन के साथ समर्पण के लिए उद्दत है। अपने लिए तो सभी जीते हैं गौरा भुवन के लिए जी रही है। क्योंकि उसे अपना भविष्य, अपने जीवन का दर्शन भुवन में ही दिखाई देता है।

निस्वार्थ प्रेम भावना -

गौरा भुवन को अपना सबकुछ मानती है। वह अपना हर फैसला भुवन पर सौंप देती है। उसका प्रेम निस्वार्थ है। भुवन से उसे प्रेम मिलेगा या नहीं, इसका विचार वह नहीं करती। चंद्रमाधव जब भुवन को विज्ञान का नशाबाज कहता है तब गौरा उसको तीखा जवाब देकर अपना भुवन के प्रति प्रेम ही दिखाती है। पूरे उपन्यास में वह अपने बारे में नहीं लेकिन भुवन के बारे में ही अधिक सोचती हुई दिखाई देती है। चंद्रमाधव को भेजे हुए पत्रों में गौरा अपने बारें में कम और भुवन के बारे में ज्यादा कुछ लिख भेजती थी। भुवन के दुःख को

वह अपना यानी स्वयं का दुःख समझकर सदा उसे दूर करने में व्यस्त दीखती है, उसका प्यार बिल्कुल निस्वार्थ निष्कलंक एवं निर्मल प्रतीत होता है। वह अपने-आपको भुवन के लिए उत्सर्ग कर देने में ही अपने जीवन की सफलता मानती है, सचमुच वह भुवन का दर्द धो देने के लिए कुछ भी कर सके तो सहर्ष निस्वार्थ रूप से तैयार है।

संगीत के माध्यम से दुःख का अंत -

गौरा कॉलेज जीवन में ही नाटक और संगीत की ओर आकर्षित होती है। बी.ए. के बाद भुवन के पत्र से प्रेरणा पाकर शादी का विरोध करते हुए संगीत की शिक्षा का चयन करती है। संगीत की साधना में वह अपने को डूबों देना चाहती है। अपने सभी दुःखो को वह संगीत के माध्यम से भूल जाती है। गौरा संगीत की अध्यापिका के रूप में कार्यरत हो जाती है। संगीत में अपने गमों को डुबा देती है और आत्मशांती पाती है। वह पूरे उपन्यास में भुवन और संगीत इन दोनों में ही उलझी दिखायी देती है। इस प्रकार गौरा संगीत के माध्यम से अपने गमों का, अपने दुःखों का अंत करना चाहती है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक चारित्रिक विशेषताओं का अंतर्भाव करनेवाली गौरा सही अर्थों में भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है।

4.4 **अपने अपने अजनबी उपन्यास में मनोवैज्ञानिकता :**

इस उपन्यास में मनोविज्ञान और अस्तित्ववाद दोनों का सुंदर समन्वय है या यों कहा जाये कि अस्तित्वादी दर्शन सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया से उभारा गया है। यह उपन्यास अस्तित्ववादी शैली में लिखा गया है और इसके अंतर्गत क्षणवाद का प्रवेश मनोवैज्ञानिक भूमिपर हो सका है। अत: यह उपन्यास मनोविज्ञान और अस्तित्ववाद का समन्वय न होकर व्यक्ति की नियति को मनोवैज्ञानिक क्षण के भीतर अस्तित्वादी जीवनदृष्टि के माध्यम से अभिव्यक्ति देता है। निष्कर्षत: अपने अपने अजनबी में अस्तित्ववादी दर्शन से जुड़े प्रश्नों का घिराव है। लेकिन ये प्रश्न दृष्टि से अधिक प्रभावित हैं बजाय दर्शन के। अपने अपने अजनबी में अस्तित्वाद साध्य न होकर साधन के रूप में प्रयुक्त हुआ है, अत: पात्रों की मन:स्थिति का अंकन मनोवैज्ञानिक धरातल पर ही संभव है। पात्रों की मुख्य समस्या है अकेलेपन से जूझने की और अकेलापन उपस्थिति सापेक्ष भी हो सकता है। व्यक्ति का मन

विषम होता है उसका विश्लेषण विभिन्न उपरकरणों द्‌वारा हो सकता है और ये उपकरण मनोविज्ञान के हो सकते हैं लेकिन केंद्र में व्यक्ति ही होता है जो विचार के धरातल पर अस्तित्व, अनस्तित्व से जूझता रहता है।

उपन्यास का कथानक मुख्य रूप से योके और सेल्मा को केन्द्र में रखकर विस्तार पाता है। अन्य पात्र यान, पॉल, जगन्नाथन आनुषंगिक हैं जो घटनाक्रम में विशेष योगदान नहीं देते। उनका उल्लेख संदर्भगत है। उपन्यास में चरित्र-चित्रण का बड़ा महत्त्व होता है। पात्रों के द्‌वारा अज्ञेय के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला गया है।

4.4.1 **सेल्मा -**

सेल्मा का प्रारंभिक जीवन अति साधारण स्तर का है, जिसमें वे सभी गुण-दोष हैं जो एक अत्यंत साधारण मानव में हो सकते हैं। वह अवसर से लाभ उठाना अपना व्यापारिक धर्म एवं अधिकार समझती है। व्यापारिक दृष्टि से, व्यापार की सर्वस्व-समर्पण की दृष्टि से सेल्मा के वे तर्क सही हो सकते हैं, लेकिन मान्यता की दृष्टि से इन तर्कों में कतई वचन नहीं हैं, और ये निश्चित रूप से सेल्मा को अति साधारण स्तर पर ही ले जाकर खडा कर देते हैं। अपनी वृद्‌धावस्था में तो सेल्मा निरंतर असाधारण ही बनी रहती है। यद्‌यपि वह जानती है कि उसकी मृत्यु सन्निकट है फिर भी वह उससे भयभीत नहीं होती है, वरन् उसका स्वागत करने के लिए उतावली ही जान पडती है। जीवन के संघर्षो ने और आसन्त मृत्यु ने सेल्मा को अपने प्रति अत्यधिक आत्मविश्वासी और ईश्वर के प्रति अतिशय आस्थावादी बना दिया है। उसकी बीमारी दिन-ब-दिन बढ़ती ही जाती है। बीमार, मरनासन्न होकर भी वह योके को दिखाना चाहती है कि वह अपना सारा काम वह स्वयं किसी का सहारा लिए बगैर कर सकती है। योके द्‌वारा अपनी बीमारी की बात को बार-बार सुनकर वह कुछ उत्तेजित हो जाती है, और उससे कहती है- ''मेरी बीमारी की बात बार-बार दोहराने की जरूरत नहीं है- मैं जानती हूँ कि मैं बीमार हूँ। मैं क्या जान-बूझकर हुई हूँ या कि तुम्हें सताने के लिए बीमार हूँ। और स्वतंत्रता कौन स्वतंत्र है? कौन चुन सकता है कि वह कैसे रहेगा, या नहीं रहेगा? मैं क्या स्वतंत्र हूँ कि बीमार न रहूँ- या कि अब बीमार हूँ तो क्या इतनी भी स्वतंत्र हूँ कि मर जाऊँ?''[27] वस्तुत: सेल्मा की यह उक्ति उसके जीवन-बोध

की आसक्ति को ही व्यक्त करती है। सेल्मा की इसी अबाध आस्था और जीवन बोध के कारण वह योके को असाधारण ही लगती है।

स्वार्थी -

सेल्मा का प्रारंभिक जीवन अति साधारण स्तर का है, जिसमें वे सभी गुण-दोष हैं जो एक अत्यंत साधारण मानव में हो सकते हैं। वह नदी के पुल पर अपना चाय घर चलाती है और खूब मुनाफा कमाती है। धनार्जन के प्रति उसके अतिशय मोह ने उसे नितांत आत्मकेंद्रित बना दिया है। वह स्वयं ही अपना एकमात्र समाज है। वह अपनी चीजों के दाम दुगुने कर देती है। उसे तनिक भी इस बात की चिंता नहीं कि वहाँ पर वे केवल तीन ही प्राणी (यान, फोटोग्राफर और सेल्मा) थे, जो अर्थहीनता से थर-थर काँपते हुए किसी प्रकार अपने अपने प्राणों को संजोये हुए थे। वह अवसर से लाभ उठाना अपना व्यापारिक धर्म एवं अधिकार समझती है। एक दिन जब प्यास से आक्रांत फोटोग्राफर उससे थोड़ा-सा पानी माँगने आता है, तब भी वह अपनी पूरी हृदयहीनता का ही परिचय देती है, ‘‘पानी मेरे पास शायद चाय बनाने लायक भर होगा। मैंने अभी चाय भी नहीं बनायी है। कहो तो वही पानी तुम्हें दे दूँ या कि यही एक प्याला चाय पी लो।’’[28] फोटोग्राफर निराश होकर प्यासा ही लौट जाता है, क्योंकि वह जान गया है कि वह बिना पैसे पानी भी देना नहीं चाहती, बल्कि चाय के बहाने पैसे वसूलना चाहती है। फोटोग्राफर की आत्महत्या के लिए सेल्मा ही जिम्मेदार है। इसे उसकी स्वार्थी प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

परपीड़नशील -

कुछ पात्रों को मानसिक पीड़ा पहुँचाने में आत्मिक आनंद मिलता है। यह भाव ही परपीड़न है। यह भाव सेल्मा में दिखायी देता है। वह फोटोग्राफर और यान के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करती। सेल्मा, फोटोग्राफर को पीने का पानी नहीं देती। गंदा पानी पीकर उसकी मौत हो जाती है। इस प्रकार सेल्मा फोटोग्राफर को मानसिक पीड़ा पहुँचाती है। सेल्मा के कारण ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

आस्थावादी -

सेल्मा अनेक प्रकार के विषैले, कटु अनुभवों का समूह है। अनुभव और जीवन-संघर्ष ने सेल्मा के हृदय में आस्था उत्पन्न कर दी है। उसका जीवन विरक्त, कुंठित, अंतर्मुखी और अहंपूर्ण है। वह ईश्वर के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करती हुई योके से कहती है - ''हाँ योके! मैं भगवान को ओढ लेना चाहती हूँ पूरा ओढ़ लेना ही चाहती हूँ। पूरा ओढ लेना कि कहीं कुछ भी उघडा न रह जाए। तुम नहीं जानती कि जिस माला की मणि तक पहुँचना है, उसके बिना एक-एक मन के का मूल्य कितना होता है।''[29] सेल्मा कैंसर से पीड़ित है, वह इसके लिए मृत्यु से संघर्ष करती है। सेल्मा की अपनी व्याधि, बुढ़ापा और मृत्यु की पूर्ण कल्पना है फिर भी उसे याद करके वह अपने को निराश करना नहीं चाहती। इससे ही उसका आस्थावादी रूप स्पष्ट होता है।

मृत्यु से न डरनेवाली -

सेल्मा को अपने अस्तित्व-बोध अपनी मृत्यु के साक्षात्कार से होता है। मरणासन्न सेल्मा मृत्यु से इतना गहरा साक्षात्कार कर लेती है कि उसके लिए मृत्यु ईश्वर-प्राप्ति का साधन ही नहीं, अपितु ईश्वर का पर्याय बन जाती है। वह अपने इस मृत्यु-बोध का वर्णन योके से निम्न प्रकार करती है-

''मुझे किसका सहारा है, मैं नहीं जानती। ईश्वर का है यह भी किस मुँह से कह सकती हूँ? शायद मृत्यु का सहारा है। वह बिलकुल पास है। सामने खड़ा है- लगता है कि हाथ बढ़ाकर उसे छू सकती हूँ।''[30] इस प्रकार सेल्मा मृत्यु को एक वरेण्य भाव मानती है, जो ईश्वर की पहचान करा सकता है।

जीवन जगत् का अनुभव -

सेल्मा जीवन जगत् के कटु-मीठे अनुभवों तथा जीवन संघर्षों को पारकर वृद्धावस्था में मृत्यु के निकटतर आ गई है। युवती सेल्मा नदी के पुल के पास दुकान चलाती थी। उसके पास ही फोटोग्राफर तथा यान की खिलौने की दुकान थी और भी बहुत-सी छोटी छोटी दुकाने थीं। भीषण वर्षा में पुल टूट जाता है और छोटी छोटी दुकाने बह

जाती हैं। खाने और पीने के पानी का अभाव हो जाता है। सेल्मा संपन्न थी। वह अपने अहं से पीडित थी। वह महान स्वार्थिनी और अमानवीय रूप में सामने आती है। अधिक से अधिक धन अर्जित करना ही उसका लक्ष्य है। वह प्यासे फोटोग्राफर को पीने का पानी तक नहीं देती। फोटोग्राफर गंदा पानी पीकर बीमार पड जाता है। और जीवन से तंग आकर दुकान को जलाकर नदी में कूदकर आत्महत्या कर लेता है। उसे यान के प्रति व्यवहार पर ग्लानि होती है। वह यान से विवाह कर लेती है। उसके तीन पुत्र होते हैं। यान की मृत्यु हो जाती है। जीवन जगत् के समस्त अनुभव समेटे हुए वह कैन्सर से पीडित मृत्यु के समीप है। जीवन संघर्ष ने सेल्मा को पूर्ण आस्थावादी बना दिया है।

परिवर्तनशील -

सेल्मा के जीवन पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि वह परिवर्तनशील पात्र है। प्रारंभ में वह यान, फोटोग्राफर के साथ रहकर अजनबीपन का व्यवहार करते हुए अपने ह्दयहीनता और क्रूरता का परिचय देती है। फोटोग्राफर सेल्मा के कारण नदी का गंदा पानी पीकर बीमार पड जाता है और आत्महत्या करता है। अगर सेल्मा के मन में उसके प्रति अल्प-सी ही क्यों न हो सहानुभूति जागृत होती, तो वह आत्महत्या नहीं करता। सेल्मा इस घटना का दायित्व अपने ऊपर नहीं लेती परंतु कहीं-न-कहीं यह भाव उसके अंतर्मन में उभर आता है कि मेरे व्यवहार के कारण ही फोटोग्राफर की मृत्यु हुई है। तभी उसकी स्वार्थी प्रवृत्ति नष्ट होती है। अंत में वह यान से विवाह करती है। इस प्रकार सेल्मा की बनाई विरोध की दीवार आत्मसमर्पण के प्रवाह में बह जाती है। इस प्रकार सेल्मा की परिवर्तनशीलता स्पष्ट हो जाती है।

4.4.2 **योके :-**

नवयुवती योके पॉल सॉरेन की प्रेमिका है। वह अपने प्रेमी के साथ बर्फ के पहाड़ों पर घूमने के लिए जाती है, और अकस्मात बर्फ के गिरने से वह अपने प्रेमी से बिछुड़कर सेल्मा के काठघर में पहुँच जाती है। अज्ञेय ने आस्थावादी पाश्चात्य संस्कृति को हारकर पौर्वात्य अस्थावादी संस्कृति की शरण में आना ही पड़ता है इस प्रमुख उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए पाश्चात्य संस्कृति के प्रतीक के रूप में ही योके का चुनाव किया है। जिस

काठघर में वह पहुँच जाती है, उस काठघर में सेल्मा अकेली थी, और अपने जीवन के अंतिम दिनों को गिन रही थी। यद्‌यपि योके नहीं चाहती थी कि वह उस बुढ़िया के पास रहे, किंतु बर्फ ने चारों ओर से उस घर को इतनी प्रगाढ़ता से घेर लिया था कि वह चाहते हुए भी वहाँ से नहीं निकल सकती थी, अत: न चाहते हुए भी उस अजनबी बुढ़िया के साथ ही वहाँ पर रहने के लिए विवश थी। वह वहाँ रहती रही, और सेल्मा अपनी मृत्यु के निकट से निकटतर होती गई और एक दिन वह परलोक सिधार गई। योके ने सेल्मा को तिल-तिल करके गलते देखा था, क्षण-क्षण मृत्यु की ओर खिसकते देखा था, और यदा-कदा उसकी मृत्यु की कामना भी की थी, क्योंकि उसका और सेल्मा का जीवन-दर्शन बिलकुल ही विपरीत था। योके अनीश्वरवादी है। ईश्वर की सत्ता में उसकी कोई आस्था नहीं है, इसलिए जब-जब सेल्मा अपनी आस्था की अभिव्यक्ति करती है, तो वह ऊबने लगती है, और कभी-कभी तो उसे सेल्मा पर अत्याधिक क्रोध भी आ जाता है। प्रतीक-रूप में योके उस पाश्चात्य संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है, जो महत्वाकांक्षी है, निरीश्वरवादी है, अतिशय वैचारिक है, अपने अस्तित्वबोध के लिए अनावश्यक रूप में चिंतित है और विदेशियों के द्‌वारा बलात्कारित है। इस संस्कृति की मृत्यु निश्चय है, वरन् यह विक्षिप्त होकर आत्महत्या करने के लिए बाध्य है। इसका यह विकृत रूप तभी सुधर सकता है, जब यह आस्था की गोद में पड़ कर पर्यवसित हो। अतीत से कटी, वर्तमान के प्रति आक्रोशशीला और वरण-स्वातंत्र्य के लिए छटपटाती हुई योके को पश्चिमी चिंतन की विकृति और दुर्बलता दिखाने के लिए ही अज्ञेय ने चुना है।

साहसी योके -

योके आल्प्स में बर्फानी चट्टानों की चढ़ाइयाँ चढ़ती रही है, एक बार हिम नदी में फिसलकर गिर भी चूकी है। उसमें हाथ- पैर टूटते - टूटते बचे थे। ऐसी भयानक दुर्घटना को भोगकर भी वह फिर इसीलिए बर्फ की सैर करने के लिए आई है, क्योंकि, ऐसी दुर्घटनाओं को झेलने के लिए वह शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार है। बर्फ से ढँके काठघर में कैद होकर भी उसे विश्वास है कि हिमपात के कारण बिछड़ा पॉल उसे अवश्य ढूँढ़ निकालेगा। इससे उसका अपने प्रेम के प्रति गहरा विश्वास स्पष्ट होता है। इस प्रकार

योके एक साहसी प्रेमिका और खतरों से खेलनेवाली स्त्री के रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित होती है।

अनास्थावाद की प्रतीक -

पाश्चात्य दर्शन की संपोषिका योके में अनास्था भाव उतना ही गहरा है, जितना गहरा सेल्मा में आस्थाभाव है। सेल्मा के आस्था भाव प्रकट करने पर योके का आक्रोश उमड़ पडता है- ''मैं क्यों बाध्य हूँ, यह सहने को, उसके द्‌वारा यों जलील किए जाने को? मैं अगर ईश्वर को नहीं मान सकती, तो नहीं मान सकती, और अगर ईश्वर मृत्यु का दूसरा नाम है। तो मैं उसे क्यों माँनू?''[31] सेल्मा की मृत्यु पर योके का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। सेल्मा की लाश देखकर उसकी आनास्था ईश्वर के प्रति समूची शक्ति से विद्रोह कर उठती है- ''एक उन्मत्त अतिमानवी निश्चय से भरकर योके ने कम्बल और चादर उठाकर दरवाजा खोल दिया। वह सेल्मा को उठाकर ईश्वर के मुँहपर मारेगी - कहेगी कि लो अपनी सड़ी हुई, गंधाती हुई मृत्यु और छोड दो मुझे मेरे अकेलेपन के साथ।''[32] सेल्मा की ईश्वर के प्रति निष्ठा, श्रद्‌धा देखकर वह ईश्वर से ही नफरत करने लगती है। मृत्यु को ही जीवन की एकमात्र सच्चाई मानने लगती है। और हमेशा मृत्यु के बारे में ही सोचने लगती है। योके का अनास्थावादी रूप सामने आता है।

कुंठित -

योके कुंठित लोगों मे से एक है। क्योंकि कुंठित लोगों को अपने मन में स्थित दमित विचार या वासना को व्यक्त करने का मौका नहीं मिलता। सेल्मा का ईश्वर के प्रति और मृत्यु के प्रति व्यवहार देखकर योके को नफरत पैदा होती है। मृत्यु के विचार आने से वह घबरा जाती है। योके की कुंठा यहाँ तक बढती है कि वह सेल्मा की जान लेना चाहती है। यह उसकी मानसिकता कुंठा का ही परिणाम है।

अहंवादी -

योके अहंवादी है। अहंवाद यह मनुष्य का एक विकार है। और यह विकार योके के अंदर दिखायी देता है। कैंसर की मरीज होने के कारण सेल्मा मृत्यु के निकटतर है, फिर भी

योके उसे बीमार कहकर उसे बीमारी की याद दिलाकर त्रस्त करती है। सेल्मा की सेवा न करना, उसका श्रेष्ठत्व न स्वीकारना, उससे उच्चता का भाव रखना उसे गड़रियों की माँ पुकारना अहंवादिता का ही रूप दिखायी देता है।

निरीश्वरवादी योके -

योके निरीश्वरवादी है। वह ईश्वर के प्रति आसक्त होने के साथ ही अपनी मृत्यु के प्रति भी अनासक्त है। वह जीवित रहने तक अपना अस्तित्व और सार्थकता मानती है। सेल्मा की मृत्यु हो जाने पर उसका अस्तित्व - बोध उबल पड़ता है। जीवन के अूभव के लिए आपने जीते होने का अनुभव करने के लिए। अपने मैं - पन को पहचानने के लिए। मैं - पन का बोध और जीवितपन का बोध। दोनों एक साथ अनुभव करने के लिए दोनों को एक अनुभूति में ढालकर उस इकाई को भोगने के लिए योके का अस्तित्व - बोध कम और दर्शन अधिक है। इस प्रकार योके निरीश्वरवादी के रूप में सामने प्रस्तुत हो जाती है।

योके की दृष्टि में मृत्यु भयानक संत्रास -

मृत्यु सभी प्राणियों को भोगना पड़ता है। जब सेल्मा योके से पूछती है कि उसका ध्यान हमेशा मृत्यु की ही और क्यों रहता है, तो वह आवेश और आक्रोश में भरकर कहती है - ''क्योंकि वही एकमात्र सच्चाई है - क्योंकि हम लोगों को मरना है।''[33] कभी - कभी योके मृत्यु के दर्शन से इतनी अधिक आक्रांत हो जाती है कि उसका जीवन बोध और अस्तित्व बोध दोनों ही डगमगाने लगते है। वह सेल्मा को निरंतर मृत्यु की ओर बढ़ती देखती है, और उसे निश्चय है कि वह एक दिन अवश्य मर जाएगी, किंतु वह अपने जीवित रहने के विषय में भी आश्वस्त नहीं है। इस प्रकार योके की दृष्टि में मृत्यु भयानक संत्रास है।

मृत्युबोध -

मृत्यु, मनुष्य के अस्तित्व के सामने एक प्रश्नचिन्ह है, उसकी गतिविधियों पर पूर्णविराम है। इसलिए मृत्यु शब्द से हर कोई भयभीत होता है। सेल्मा मृत्यु की तरफ खिंची चली जा रही थी। वह मृत्यु को ईश्वर प्राप्ति का साधन नानती है। सेल्मा का यह व्यवहार

और उसके मुँह से मृत्यु शब्द सुनकर योके भयभीत हो जाती है। वह जानती थी की, मृत्यु जीवन का खंड़न है। अत: बार-बार मृत्युबोध से वह भयभीत रहती है।

योके का चरित्र गतिशील है -

सेल्मा के ईश्वर और मृत्यु के प्रति आस्था से भरे कथन योके को इतना अधिक विक्षुब्ध कर देते हैं कि उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। काठघर से निकलने के पश्चात् वह अपनी विक्षिप्तता के कारण दूर से दिखाई देने वाले अपने प्रेमी पॉल सॉरेन को भी नहीं पहचान पाती। वह इधर-उधर भटकती फिरती है, और वह सर्वथा पागल हो जाती है और अंत में आस्थावादी जगन्नाथन् की बाहों में आत्महत्या कर लेती है। उसका अंत दुखांत है। परंतु अनास्था से आस्था की वरण करना ही उसके जीवन की मुक्ति है। मरते समय उसके मुख से 'ईश्वर' शब्द ही निकलता है। इस प्रकार योके का चरित्र प्रगतिशील और गतिशील है। वह आस्थावादी जगन्नाथन् की बाहों में मरकर आस्थावादी अर्थात् ईश्वर को मानने वाली बन जाती है।

बलात्कारित पागल योके -

सेल्मा की मृत्यु के बाद योके का मानसिक संतुलन बिघड़ता है और वह जर्मन सैनिकों के चंगुल में फँस जाती है। जर्मन सैनिक उसका बलात्कार करते है और उससे ही वह पागल बन जाती है। पागलावस्था में ही वह राशन के दुकान पर खड़े जगन्नाथन् का पनीर बिघाड़ती है। जगन्नाथन् जब उसका पीछा करता है। तब लोग योके को आगंतुका कहते हैं। उसकी इच्छा थी कि उसकी मृत्यु अच्छे आदमी के बाहों में हो। वह जहर खाकर जगन्नाथन् के बाहों में ही अपना दम तोड़ देती है। अनास्थावादी योके को अंत मे आस्थावाद की शरण में आना ही पड़ता है।

इस प्रकार अज्ञेय ने 'सेल्मा' और 'योके' इन स्त्री पात्रों के द्वारा 'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।

मनोवैज्ञानिकता और पात्रों का चित्रण करनेवाला उपन्यासकार एक विशेष विचारधारा को स्वीकार करके चलता है। मूलतः उपन्यासकार मानते हैं कि मानव जीवन गतिशील है। उसमें कभी भी गतिविरोध नहीं आता। प्रकृति के नियमानुसार वह आगे बढ़ता

रहता है। उपन्यासकार समाज के इन विकास सूत्रों को पहचानने का प्रयास करता है और उन्हें पहचानकर व्यक्तियों के साथ जोड़ देता है। अज्ञेय जी एक मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार रहे हैं। वे यायावरी से यारी करते रहे। 'शेखर : एक जीवनी' 'नदी के द्वीप' 'अपने-अपने अजनबी' इन उपन्यासों में शेखर, शशि, भुवन, चंद्रमाध्व, रेखा, गौरा, सेल्मा और योके जैसे पात्रों के मनोवैज्ञानिक विशेषताओं से स्पष्ट होता है कि अज्ञेय के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता पनपती है। व्यक्तित्व के चरित्र गठन में उनका स्वभाव और परिवेश जो तनाव निर्माण करते जा रहे हैं इसका विवेचन अज्ञेय के उपन्यासों में दिखाई देता है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्याय के विवेचन-विश्लेषण के पश्चात इस निष्कर्ष तक पहुँच सकते हैं कि अज्ञेय के शेखर, शशि, भुवन, चंद्रमाधव, रेखा, गौरा, सेल्मा और योके यह सभी प्रमुख पात्र मनोवैज्ञानिक हैं। सेल्मा भारतीय आस्थावाद के प्रतीक के रूप में हमारे सामने आती है। साक्षात मृत्यु को देखकर भी तटस्थ भाव से वह उसकी ओर देखती रहती है। योके जो अनास्थावाद का प्रतिनिधित्व करती है उसे आखीर अपने जीवन में हारकर आस्थावाद की शरण में आना पड़ता है। शेखर के मन में अनेक जिज्ञासाएँ जाग उठती है, लेकिन कोई भी इस जिज्ञासा की पूर्ति नहीं करता। इसी कारण वह बहुत ही कुंठित, अहंवादी एवं विद्रोही बनता है। शशि के चरित्र-चित्रण का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के पश्चात हम संक्षेप में कह सकते हैं कि शशि की शारीरिक और मानसिक यातनाओं की शिकार, कर्तव्यपरायणता, प्रेरणादायी और प्रेमिका आदि विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं। 'नदी के द्वीप' उपन्यास का नायक भुवन तो कहने के लिए ही वैज्ञानिक है। हर वक्त वह कभी रेखा के पीछे तो कभी गौरा के पीछे दौड़ता है। रेखा और गौरा के बारे में उसका मन द्वंद्व में उलझ जाता है और वह विवश होकर सैन्य में भरती होता है। चंद्रमाधव प्रत्येक नारी के प्रति आसक्त दिखाई देता है। भुवन के प्रति रेखा और गौरा को आसक्त देखकर वह भुवन को ईर्ष्या करने लगता है। उसके व्यक्तित्व में कामुकता तथा भोगवाद स्पष्ट ही झलकता है। रेखा और गौरा का मनोवैज्ञानिक चित्रण करने से पता चलता है कि दोनों अज्ञेय के उपन्यासों की अमर स्त्री पात्र

हैं। अतः स्पष्ट है अज्ञेय जी के 'शेखर : एक जीवनी' 'नदी के द्वीप' और 'अपने अपने अजनबी' ये उपन्यास मनोवैज्ञानिकता की कसौटी पर खरे उतरें हैं।

संदर्भ :

1. अज्ञेय- अपने-अपने अजनबी, पृष्ठ 48
2. अज्ञेय- शेखर: एक जीवनी, भाग 1, पृष्ठ 81
3. अज्ञेय- अपने-अपने अजनबी, पृष्ठ 36
4. अज्ञेय- शेखर: एक जीवनी, भाग 1, पृष्ठ 51
5. अज्ञेय- अपने-अपने अजनबी, पृष्ठ 41, 42
6. अज्ञेय- शेखर: एक जीवनी, भाग 1, पृष्ठ 28
7. अज्ञेय- शेखर: एक जीवनी, भाग 2, पृष्ठ 201
8. अज्ञेय- नदी के द्वीप, पृष्ठ 76
9. अज्ञेय- शेखर: एक जीवनी, भाग 1, पृष्ठ 212
10. अज्ञेय- अपने-अपने अजनबी, पृष्ठ 27
11. अज्ञेय- शेखर: एक जीवनी, भाग 1, पृष्ठ 68
12. अज्ञेय- शेखर: एक जीवनी, भाग 1, पृष्ठ 49
13. अज्ञेय- शेखर: एक जीवनी, भाग 1, पृष्ठ 203
14. डॉ. रामविलास शर्मा - अज्ञेय के उपन्यास प्रकृति और प्रस्तुती, पृष्ठ 103
15. अज्ञेय- शेखर: एक जीवनी, भाग 2, पृष्ठ 156, 157
16. डॉ. भागवत शरण उपाध्याय - समीक्षा के संदर्भ, पृष्ठ 87
17. अज्ञेय- नदी के द्वीप, पृष्ठ 176
18. अज्ञेय- नदी के द्वीप, पृष्ठ 10
19. अज्ञेय- नदी के द्वीप, पृष्ठ 198
20. अज्ञेय- नदी के द्वीप, पृष्ठ 443

21. अज्ञेय- नदी के द्वीप, पृष्ठ 48

22. अज्ञेय- नदी के द्वीप, पृष्ठ 155

23. अज्ञेय- नदी के द्वीप, पृष्ठ 212

24. अज्ञेय- नदी के द्वीप, पृष्ठ 73, 74

25. अज्ञेय- नदी के द्वीप, पृष्ठ 400

26. अज्ञेय- नदी के द्वीप, पृष्ठ 40

27. अज्ञेय- अपने-अपने अजनबी, पृष्ठ 10

28. अज्ञेय- अपने-अपने अजनबी, पृष्ठ 88

29. अज्ञेय- अपने-अपने अजनबी, पृष्ठ 19,20

30. अज्ञेय- अपने-अपने अजनबी, पृष्ठ 53

31. अज्ञेय- अपने-अपने अजनबी, पृष्ठ 41,42

32. अज्ञेय- अपने-अपने अजनबी, पृष्ठ 77

33. अज्ञेय- अपने-अपने अजनबी, पृष्ठ 57

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.